1 तीमुथियुस 2:11-15 में शिक्षा देना, प्रभुता करना और बहुत कुछ

Cynthia Long Westfall (सिंथिया लॉन्ग वेस्टफ़ॉल) · जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf · फ़रवरी 2021 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

“स्त्री चुपचाप पूरी अधीनता में सीखे। पर मैं स्त्री को न शिक्षा देने की अनुमति देता हूँ, न पुरुष पर प्रभुता करने की, बल्कि वह चुप रहे; क्योंकि आदम पहले बनाया गया, उसके बाद हव्वा; और आदम बहकाया नहीं गया, पर स्त्री बहकाई गई और अपराध में पड़ गई। पर वह बच्चे जनने के कष्ट में उद्धार पाएगी, यदि वे विश्वास और प्रेम और पवित्रता में संयम के साथ बनी रहें।” (Elberfelder अनुवाद, Edition CSV Hückeswagen – जर्मन बाइबल अनुवाद; यहाँ का पाठ इसी जर्मन अनुवाद से अनूदित है)

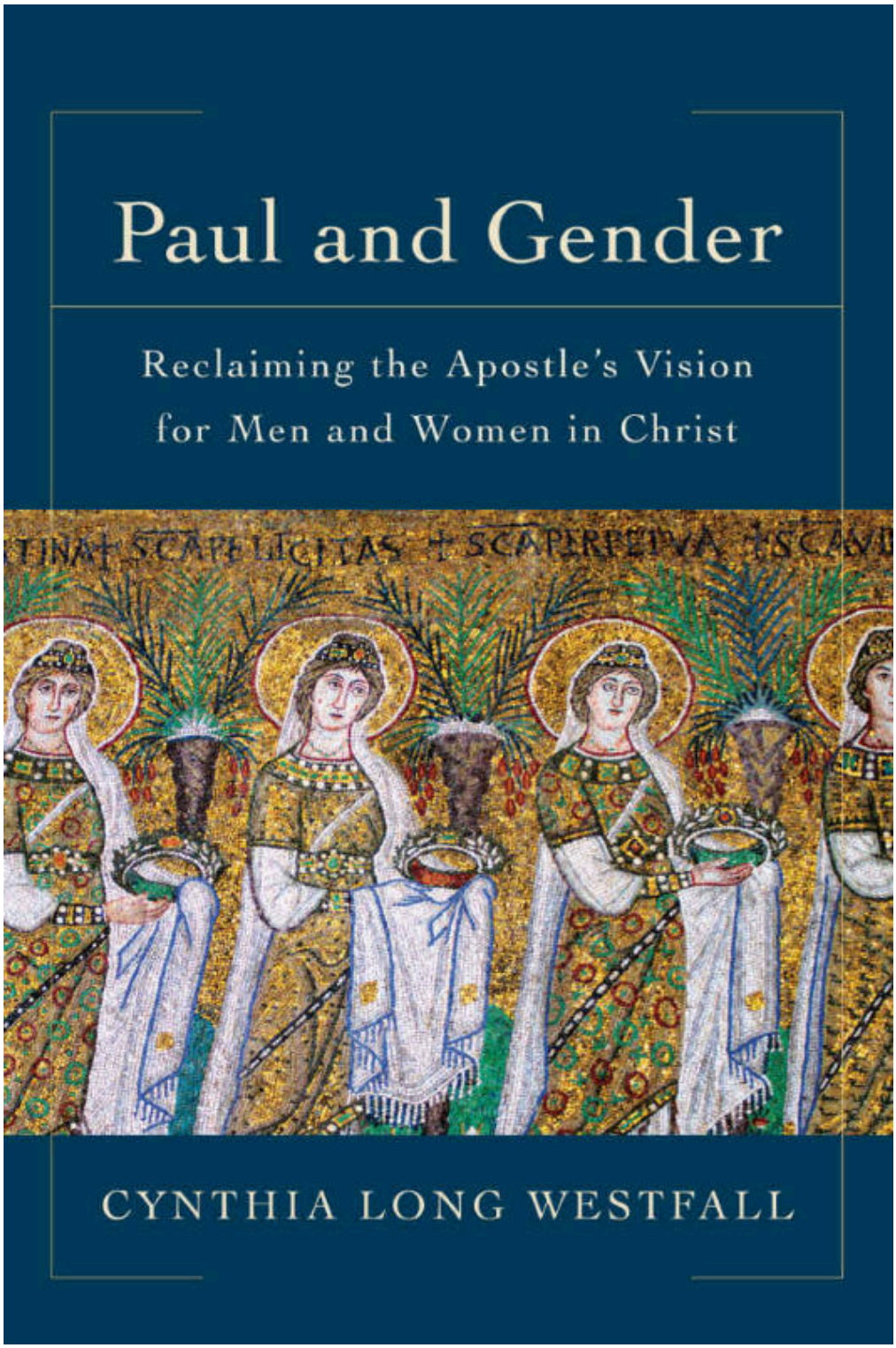

Westfall, Cynthia Long. 2016

Paul and Gender: Reclaiming the Apostle's Vision for Men and Women in Christ.

Baker Publishing Group. Kindle संस्करण। **अध्याय 9 (पृ. 279 से) का अनुवाद, अनेक फ़ुटनोट और स्रोत-संदर्भों के बिना।**

पौलुस और लिंग-प्रश्न पर व्यापक रूप से विचार करने के हर प्रयास को 1 तीमुथियुस 2:11-15 से जूझना पड़ता है, और इस बात से कि इस वचन-भाग को पौलुस की बाकी पत्रियों की दृष्टि से और पत्री के संदर्भ में कैसे पढ़ा जाना

चाहिए। **ऐतिहासिक रूप से 1 तीमुथियुस 2:12 वह मुख्य वचन-भाग है जिसका उपयोग आज तक स्त्रियों को कलीसिया के भीतर कुछ कार्यों और भूमिकाओं से बाहर रखने के लिए किया गया है, चाहे स्त्री की शिक्षा, योग्यता या आत्मिक वरदान कुछ भी हों।** इस वचन-भाग ने एक चश्मा या एक व्याख्यात्मक ढाँचा बना दिया है, जिसके द्वारा स्त्रियों के बारे में बाइबल के अन्य सभी वचन-भाग समझे जाते हैं। पारंपरिक व्याख्या में तो सचमुच ऐसा लगता है कि इस बाइबल-वचन की आज्ञाकारिता, अधीनता के साथ मिलकर, स्त्री की बुलाहट के पूरे क्षेत्र को चिन्हित और सीमित करती है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि इस खंड की एक अधिक व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की जाए और व्याख्या की संभावनाओं और कुछ व्याख्यात्मक निर्णयों के परिणामों (निहितार्थों) की जाँच की जाए। अंत में मैं इस खंड को पढ़ने की एक सुसंगत रीति प्रस्तुत करती हूँ। वह वचन-भाग के साथ न्याय करती है – इफिसुस की संस्कृति के समग्र संदर्भ में और 1 तीमुथियुस की पत्री के संदर्भ में, जिसमें पत्री का घोषित उद्देश्य और अभिप्राय तथा तीमुथियुस को लिखी पत्रियों की संबंधित जानकारी शामिल है। और वह पौलुस के वि-चार-क्रम के साथ भी न्याय करती है।

1 तीमुथियुस 2:11-15 की हर व्याख्या एक व्याख्या-प्रक्रिया के द्वारा वचन-भाग के बारे में निष्कर्षों तक पहुँचती है। व्याख्या के कई महत्वपूर्ण दोराहे या मोड़ हैं, जहाँ व्याख्याकार संबंधित वचन-भाग पर ठोस रूप से ध्यान देने से पहले ही निर्णायक फ़ैसले कर लेते हैं – ऐसे फ़ैसले जो परिणाम को प्रभावित करते हैं। इनमें से कुछ फ़ैसले तो अपेक्षाकृत बिना जाँची धारणाएँ भी प्रतीत होते हैं। मैं इन मोड़ों को उभारूँगी और व्याख्यात्मक फ़ैसलों के निहिता-र्थों पर चर्चा करूँगी। पत्री के लक्ष्य को झूठी शिक्षा के खंडन के रूप में पहचानने के बाद, जैसा कि भूमिका में 1 तीमुथियुस 1:3-4 में कहा गया है, मैं लिंग से जुड़ी झूठी शिक्षाओं और प्रथाओं के बारे में पत्री की जानकारी को एकत्र करूँगी। पुरुषों और स्त्रियों के बीच झूठी शिक्षा के बारे में जानकारी वह संदर्भ या दृष्टिकोण देगी, जिसमें 2:8-10 में पुरुषों और स्त्रियों को दिए गए निर्देश पढ़े जाने चाहिए – और उसी प्रकार एक स्त्री को दिया गया विशेष निर्देश और उससे जुड़े निषेध भी। इससे इस खंड को पढ़ने की एक नई रीति संभव होगी, जो संदर्भ, वचन-भाग और पौलुस के धर्मविज्ञान के अनुरूप है।

9.1 दूरगामी व्याख्यात्मक निर्णय

वचन-भाग का विश्लेषण होने से पहले ही कई व्याख्यात्मक निर्णय लिए जा चुके होते हैं, जो सीधे उसकी व्याख्या पर प्रभाव डालते हैं।

पहला मतभेद इस प्रश्न से संबंधित है कि क्या यह वचन-भाग कलीसिया और मसीही जीवन के लिए बाध्यकारी (आधिकारिक) है।

दूसरा मतभेद पौलुस के लेखक होने से संबंधित है।

तीसरा मतभेद इस प्रश्न से संबंधित है कि पत्र पाने वाला एक व्यक्ति है या एक समूह।

चौथा मतभेद उस भूमिका से संबंधित है जो संदर्भ वचन-भाग के अभिप्राय को निर्धारित करने में निभाता है।

पाँचवाँ मतभेद 1 तीमुथियुस 2:1-15 के घटना-स्थल या परिदृश्य की पहचान से संबंधित है।

हर निर्णय-बिंदु पर जो चुनाव किया जाता है, वह प्रायः अन्य चुनावों को भी निर्धारित करता है।

9.1.1 आधिकारिक परमेश्वर-वचन के रूप में 1 तीमुथियुस की पत्री

मेरा सुझाव है कि एक मूलभूत व्याख्यात्मक निर्णय यह है कि कलीसिया में वचन-भाग को आधिकारिक माना जाता है या नहीं। यह व्याख्याकारों के बीच सबसे बड़ी खाई है और किसी के वचन-भाग के प्रति अपने दृष्टिकोण का स्पष्ट संकेतक है। जैसा नीचे चर्चा की गई है, अधिकांश विद्वान पास्टरीय पत्रियों के पौलुस द्वारा लिखे जाने को अस्वीकार करते हैं। परिणामस्वरूप जो लोग उसके लेखक होने को अस्वीकार करते हैं, वे या तो पत्री की उपेक्षा कर सकते हैं (जो आम है) या, नारीवादी दृष्टिकोणों की तरह, लेखक को ऐसे प्रस्तुत कर सकते हैं मानो वह स्त्रियों के बारे में पहली या दूसरी शताब्दी के एक अप्रिय और अस्वीकार्य विश्वदृष्टिकोण से संचालित हो। कुछ लोग इस वचन-भाग की व्याख्या पौलुस की अन्य पत्रियों के घोर विरोध में करते हैं, बजाय इसके कि उसे पौलुस के अन्य लेखों के संदर्भ में समझें। फिर भी ऐसे लोग भी हैं जो पत्री को आधिकारिक मानते हैं – या तो इसलिए कि वह धर्म-सिद्धांत-संग्रह (कैनन) का भाग है, या इसलिए कि वे उसे पौलुस की मानते हैं। जो लोग पौलुस के लेखक होने पर प्रश्न उठाते हैं, पर उसे कैनन के आधिकारिक भाग के रूप में स्वीकार करते हैं, वे फिर भी अधिकार की दृष्टि से इस पुस्तक को कैनन के किनारे पर रख सकते हैं। जो लोग वचन-भाग को पौलुस का मानते हैं, वे सावधानीपूर्ण व्याख्यात्मक कार्य में लगने के लिए भी अधिक प्रेरित होते हैं। उनकी रुचि उसे पौलुस के अन्य खंडों के साथ जोड़कर समझने में और पौलुस के एक सुसंगत (अर्थात् तार्किक रूप से जुड़े हुए, समझ में आने वाले) धर्मविज्ञान के निर्माण में उसका उपयोग करने में होती है।

9.1.2 पौलुस की पत्री के रूप में 1 तीमुथियुस की पत्री

1 तीमुथियुस 1:1 में कहा गया है कि यह पत्री "पौलुस की ओर से, जो मसीह यीशु का प्रेरित है" लिखी गई है, जो उसे पौलुस की पत्री के रूप में पहचानता है। फिर भी अधिकांश विद्वान उसे पौलुस की मृत्यु के बाद पौलुस के एक मंडल द्वारा लिखी गई और पहली शताब्दी के अंत या दूसरी शताब्दी के आरंभ में रची गई मानते हैं। ऐसी स्थिति में वह पौलुस के धर्मविज्ञान का एक बाद का विकास या विस्तार होती, या शायद उसका सुधार। एक अल्पसंख्यक वर्ग उसे ऐतिहासिक पौलुस द्वारा उसके जीवनकाल में लिखी गई मानता है, और पास्टरीय पत्रियों की अतिरिक्त जीवनी-संबंधी सामग्री को उसके जीवन में स्थान देता है। पास्टरीय पत्रियाँ ढाँचे को बढ़ाती हैं और प्रेरितों के काम और पौलुस की अन्य पत्रियों में जो मिलता है, उसमें जीवनी-संबंधी जानकारी जोड़ती हैं। जो लोग यह मत रखते हैं, वे इस पत्री की व्याख्या पौलुस के बड़े लेख-संग्रह के धर्मविज्ञान के संदर्भ में भी करना चाहते हैं। जबकि अधिकांश साधारण विश्वासी मानते हैं कि यह वचन-भाग अकेले पौलुस ने लिखा, विद्वानों में यह स्वीकार करना आम है कि पौलुस ने पत्री लिखने के लिए एक आमानुएंसिस (Amanuensis, एक लेखक/लिपिक), जैसे लूका, का उपयोग किया। जो लोग पौलुस के लेखक होने पर दृढ़ हैं, उनकी सर्वसम्मति यह है कि 1 तीमुथियुस प्रेरितों के काम में दर्ज घटनाओं के बाद लिखी गई, जिससे वह स्थिति और परिस्थितियाँ, जिनकी चर्चा पौलुस ने इफिसुस के संबंध में की, लगभग 63–65 ईस्वी में रखी जाएँगी – अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान इफिसुस में पौलुस के लंबे प्रवास के कम से कम आठ वर्ष बाद (प्रेरितों के काम 19:10), और दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान लगभग 49 ईस्वी में तीमुथियुस के पौलुस की मिशनरी टीम से जुड़ने के कम से कम चौदह वर्ष बाद (प्रेरितों के काम 16:1-3)।

9.1.3 व्यक्तिगत पत्र के रूप में 1 तीमुथियुस की पत्री

वचन-भाग पत्र पाने वाले की पहचान "तीमुथियुस, विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र" (1:2) के रूप में करता है **और औपचारिक रूप से संकेत देता है कि यह एक व्यक्तिगत पत्र है। फिर भी अधिकांश विद्वान मानते हैं कि 1 तीमुथियुस एक सार्वजनिक पत्र है, जो कलीसिया के एक बड़े समूह को या मसीही कलीसियाओं को लिखा**

गया। इन विद्वानों में वे भी हैं जो पौलुस के लेखक होने को अस्वीकार करते हैं, और वे भी जो पौलुस के लेखक होने को स्वीकार करते हैं, पर यह तर्क देते हैं कि यह एक सार्वजनिक पत्र है – और वह भी केवल समापन-वाक्य "तुम सब पर अनुग्रह होता रहे" (6:21) में मध्यम पुरुष बहुवचन के प्रयोग के आधार पर। अभिवादन (1:1) के कारण, मध्यम पुरुष एकवचन के निरंतर प्रयोग के कारण और तीमुथियुस के संबंध में सीधे संबोधन के कर्ता या संबोधन कारक एकवचन के कारण (1:18; 6:11,20), इस वचन-भाग में व्यक्तिगत पत्र के औपचारिक लक्षण हैं। अंत में मध्यम पुरुष बहुवचन में दिया गया अभिवादन किसी सार्वजनिक या सामूहिक पत्र की ओर संकेत नहीं करता, जैसा पपीरस में मिले व्यक्तिगत पत्र प्रमाणित करते हैं; **ऐसे समापन, जिनमें पत्र पाने वाले के परिवारों, समुदायों या अन्य समूहों के लिए आशीष और/या स्वास्थ्य की शुभकामनाएँ होती हैं, व्यक्तिगत पत्रों में आम हैं।** पर व्यक्तिगत पत्र के रूप में चिन्हित होने का अर्थ यह नहीं है कि यह कोई निजी, गोपनीय पत्र है (अर्थात् ऐसा पत्र जो स्पष्ट रूप से दूसरों के पढ़ने के लिए नहीं है)। प्राचीन काल में यह स्वाभाविक था कि व्यक्तिगत पत्रों में महत्वपूर्ण समाचार होते थे और वे बड़े मंडलों में पढ़े और आगे बढ़ाए जाते थे; फिर भी वे लेखक और पत्र पाने वाले के संबंध और चिंता को प्रतिबिंबित करते थे, न कि जनता की। पत्र पाने वाला पत्र की व्याख्या करने और उसे रुचि रखने वाले बड़े मंडल को समझाने में सक्षम था। प्राचीन पत्र-सिद्धांत को देखते हुए, मैं केवल व्याकरण के आधार पर यह सुझाव देती हूँ कि 1 तीमुथियुस को एक अकाल्पनिक (अर्थात् किसी दूसरे द्वारा और बाद में न लिखा गया) और असार्वजनिक ("साहित्यिक" नहीं) पत्र के रूप में वर्गीकृत किया जाए। यदि उसे सार्वजनिक पत्र के रूप में वर्गीकृत किया जाए, तो पत्र-सिद्धांत के अनुसार वह काल्पनिक (असली नहीं) होगा, क्योंकि वह स्वयं को एक व्यक्तिगत पत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। वह तभी सार्वजनिक हो सकता था जब वह एक बड़े जनसमूह के लिए लिखा गया होता और न तो पौलुस और तीमुथियुस के संबंध में जड़ें रखता और न ही इफिसुस की स्थिति या तीमुथियुस की सेवा की समस्याओं से प्रभावित होता। **इससे अलग, लेखक के संकेत यह दर्शाते हैं कि इसे एक व्यक्तिगत पत्र के रूप में पढ़ा जाना चाहिए।** पौलुस के लेखक होने पर प्रश्न इसलिए उठाया जाता है क्योंकि पास्टरीय पत्रियों की भाषा और शैली शब्द-भंडार, वाक्य-रचना और अलंकारिक शैली में पौलुस के बाकी पत्र-संग्रह से भिन्न है। पर कॉर्पस भाषाविज्ञान के नए अध्ययनों ने दिखाया है कि जब विधा बदलती है या रजिस्टर की विशेषताएँ बदलती हैं (पत्र पाने वाला, परिस्थिति का संदर्भ, विषय-वस्तु), तो किसी व्यक्ति की लेखन-शैली और विषय काफ़ी बदल जाते हैं। ये भिन्नताएँ और भी अधिक हो सकती हैं जब लेखक की परिस्थितियाँ और आयु बदलती है, या जब पत्र किसी सचिव/आमानुएंसिस ने सह-लेखक के रूप में लिखे हों या पूरी तरह स्वयं लिखे हों, जैसा कि बहुत-से लोग पौलुस की पत्रियों के आंतरिक प्रमाणों के आधार पर दावा करते हैं (रोमियों 16:22; 1 कुरिन्थियों 1:1; तुलना कीजिए 16:21; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलातियों 1:1; तुलना कीजिए 6:11; फिलिप्पियों 1:1; कुलुस्सियों 1:1; तुलना कीजिए 4:18; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1; तुलना कीजिए 3:17; फिलेमोन 19)। वास्तव में इफिसियों की पत्री और पास्टरीय पत्रियाँ ही पौलुस की ऐसी पत्रियाँ हैं जो स्पष्ट रूप से सह-लेखकों या आमानुएंसिसों का उल्लेख नहीं करतीं, और अन्य पत्रियों में पत्र-लेखन प्रक्रिया के भाग के रूप में उल्लिखित व्यक्तियों में काफ़ी विविधता है। किसी विश्वस्त सहकर्मी को, जो सेवा की विशेष समस्याओं का सामना कर रहा हो, लिखा गया एक व्यक्तिगत पत्र पौलुस के लेख-संग्रह की निर्विवाद पत्रियों से बिलकुल अलग रजिस्टर (एक अलग भाषा-स्तर) रखता है और भाषा में परिवर्तन को समझा सकता है। पर यदि 1 तीमुथियुस को एक सार्वजनिक पत्र के रूप में वर्गीकृत किया जाए, जिसे एक बड़े जनसमूह को पढ़ना है, तो उसे ऐसे रजिस्टर में रखा जाता है जो पौलुस के बाकी लेख-संग्रह के अधिक निकट है और भाषा और शैली की भिन्नताओं को कम आसानी से समझाता है। एक सार्वजनिक या काल्पनिक पत्र, जिस संस्कृति में वह लिखा गया, उसके संदर्भ में अपेक्षाकृत आसानी से अपने आप से ही समझ में आ जाता है, क्योंकि वह एक अधिक सामान्य पाठक-वर्ग द्वारा समझे जाने के लिए लिखा गया था। **लंबे समय से**

संबंध रखने वाले लोगों, जैसे पौलुस और तीमुथियुस, के बीच का एक व्यक्तिगत पत्र अधिक घनिष्ठता का प्रमाण देता है, और संवाद उन जानकारियों पर निर्भर होगा जो घनिष्ठ लोग आपस में बाँटते हैं।

9.1.4 पत्री के संदर्भ की भूमिका

यदि 1 तीमुथियुस की पत्री को एक गढ़ा हुआ (काल्पनिक) और/या सार्वजनिक पत्र माना जाए, तो संदर्भ की भूमिका काफ़ी घट जाती है। अर्थात्, यदि यह पौलुस द्वारा इफिसुस में रह रहे तीमुथियुस को लिखा गया व्यक्तिगत पत्र नहीं है (सामान्य प्रसार के लिए लिखे गए पत्र [साहित्यिक] या छद्मनाम वाले पत्र [काल्पनिक] के विपरीत), तो उन विशेष घटनाओं और परिस्थितियों को खोजने का कारण कम होगा जो विषय-वस्तु को निर्धारित करतीं या समझातीं। यदि यह माना जाए कि पत्री पौलुस के परिवेश द्वारा लिखी गई, तो संदर्भ महत्वपूर्ण है, पर वह बाद के कलीसियाई विषयों से जुड़ा है, जो शायद स्थानीय विषय नहीं हैं, और वह कलीसिया-विज्ञान में बाद के धर्मवैज्ञानिक विकास को प्रतिबिंबित करता है। यदि 1 तीमुथियुस को पौलुस द्वारा लिखा गया एक सार्वजनिक पत्र माना जाए, तो यह माना जा सकता है कि वह पौलुस के स्थापित धर्मविज्ञान की अभिव्यक्ति है – पूरी कलीसिया के लिए आचरण-व्यवस्था का एक विवरण। **मूल रूप से प्रश्न यह है कि क्या इस पत्री को अपने आप में पढ़ा जाए – ठोस विषयों की चर्चा के रूप में, जिनका इफिसुस की कलीसिया में कुछ विशेष सामाजिक प्रभाव होना था – या क्या इसे मुख्य रूप से धर्मविज्ञान के रूप में पढ़ा जाए।** पर यदि यह माना जाए कि 1 तीमुथियुस एक असली व्यक्तिगत पत्र है (या कुछ लोगों के लिए एक छद्म-व्यक्तिगत पत्र, जिसे स्पष्ट रूप से पौलुस के जीवन और उसके व्यक्तिगत संबंधों के संदर्भ में पढ़ा जाना है), तो परिभाषा के अनुसार उसकी सही व्याख्या में संदर्भ की बड़ी भूमिका होगी। उसे पौलुस और तीमुथियुस के एक लंबे व्यक्तिगत संबंध के संदर्भ में रखा जाएगा, और जानकारी का प्रवाह इस संबंध को प्रतिबिंबित करेगा। पौलुस की तीमुथियुस से भेंट दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान हुई, जब वह वर्ष 49 में लुस्त्रा गया। तब से तीमुथियुस मिशनरी टीम का भाग था, और 1 तीमुथियुस लिखे जाने से पहले उसने शायद चौदह से सोलह वर्ष पौलुस के साथ काम किया था। **दूसरे शब्दों में: तीमुथियुस को पौलुस पहले ही व्यापक रूप से मार्गदर्शन और शिक्षा दे चुका था, इसलिए 1 तीमुथियुस का निर्देश उस बात को, जो पौलुस ने उसे सिखाई थी, परिस्थिति पर लागू करता और उस पर आगे निर्माण करता। परिस्थिति पहली शताब्दी के मध्य में इफिसुस की दशा को भी प्रतिबिंबित करती, इसलिए सामाजिक-ऐतिहासिक ढाँचा वचन-भाग को और इफिसुस की विशेष स्थिति को समझने में एक आवश्यक भूमिका निभा सकता है।** जहाँ तक तात्कालिक संदर्भ का प्रश्न है, पौलुस इफिसुस की कलीसिया की उन समस्याओं की बात करता है जो उसकी वहाँ उपस्थिति के समय इतनी गंभीर थीं कि उसने तीमुथियुस से उन्हें सुधारने के लिए वहीं रुकने को कहा (1:3)। तब झूठी शिक्षा का सुधार ही 2:1-15 के निर्देशों का कारण होता।

9.1.5 2:1-15 का संदर्भ या परिदृश्य

अगला व्यापक व्याख्यात्मक निर्णय वह संदर्भ या परिदृश्य है जो 2:9-15 के खंड के लिए माना जाता है। शायद इन निर्णयों में यह सबसे महत्वपूर्ण है। फिर भी अक्सर यह पहचाना ही नहीं जाता कि यह पूरी तरह अनुमान पर आधारित एक निर्णय है; इसे बस मान लिया जाता है और शायद ही कभी इसका कारण बताया जाता है। **अधिकांश विद्वान मानते हैं कि 2:11-15 साप्ताहिक आराधना के समय कलीसिया की व्यवस्था या कलीसिया की सभा में आचरण के बारे में है।** उदाहरण के लिए I. Howard Marshall (आई. हॉवर्ड मार्शल) कहते हैं: "विषय कलीसिया की सभा में प्रार्थना है।" फिर वे प्रार्थना के विषय के संबंध में अध्याय का वर्णन करते हैं। Marshall के अनुसार प्रार्थना की आवश्यकता पर उसके सार्वभौमिक विस्तार में बल दिया गया है, फिर पुरुषों के

संबंध में, फिर स्त्रियों के संबंध में प्रार्थना की नैतिक माँगें बताई गई हैं, जो इस विषयांतर तक ले जाती हैं कि स्त्रियों के लिए यह आवश्यक है कि वे शिक्षा न दें, बल्कि चुपचाप सीखें। **इस पढ़ने की रीति की पहली समस्या यह है कि 2:1 या 2:8 में कोई संकेत नहीं है कि माँगी गई प्रार्थना स्थान और समय की दृष्टि से कलीसिया की सभाओं तक सीमित होनी चाहिए।** वास्तव में पौलुस के धर्मविज्ञान में भी और यहूदी धर्म तथा यूनानी-रोमी जगत में प्रार्थना की प्रथा के संदर्भों में भी काफ़ी संकेत हैं जो इस धारणा के विरुद्ध जाते हैं। पौलुस की शिक्षा अन्य स्थानों पर निरंतर प्रार्थना और हर समय धन्यवाद करने की आवश्यकता पर बल देती है (रोमियों 1:9; इफिसियों 1:16; 6:18; फिलिप्पियों 1:4; 4:6; कुलुस्सियों 1:9; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17-18; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3,11; फिलेमोन 4), जो कलीसिया की सभाओं के किसी विशेष समय तक सीमित नहीं है। 1 तीमुथियुस 2:8 में पौलुस पुरुषों को स्पष्ट रूप से ἐν παντὶ τόπῳ ("हर जगह") प्रार्थना करने का निर्देश देता है। यह कथन स्थान से संबंधित है – संज्ञा ἐκκλησία ("सभा, मंडली") के विपरीत, जिसका प्रयोग पौलुस सामान्यतः आराधना-सभा के लिए करता है, जैसे 3:5,15; 5:16 में (हर जगह या हर समय प्रार्थना के अन्य असीमित संदर्भों के लिए देखिए रोमियों 1:9-10; इफिसियों 6:18; 1 थिस्सलुनीकियों 1:3; 2:13; 5:17; 2 तीमुथियुस 1:3)। इसके अतिरिक्त यहूदी, मसीही और यूनानी-रोमी प्रार्थना-प्रथाएँ पवित्र स्थानों (मंदिरों, देवस्थानों, आराधनालयों) या आराधना-सभाओं तक सीमित नहीं थीं। प्रार्थना बिलकुल अलग-अलग स्थानों पर होती थी, जैसे सड़क पर, नदी के किनारे, समुद्र-तट पर, जहाज़ पर, बीमार की खाट के पास या बंदीगृह में (मत्ती 6:5; प्रेरितों के काम 16:13; 20:36; 21:5; 27:35; 28:8; याकूब 5:13-14; कुलुस्सियों 4:3,18)। वह महीने/सप्ताह/दिन के किसी भी समय, किसी भी स्थान पर हो सकती थी, जिसमें मंदिर, आराधनालय और घर शामिल हैं (प्रेरितों के काम 2:42-47; 3:1)। वह समूहों में, परिवार में या अकेले हो सकती थी। **1 तीमुथियुस 2:1-8 में ऐसा कुछ नहीं है जो संदर्भ को किसी "सार्वजनिक आराधना" तक संकुचित कर दे – इस बात को तो छोड़ ही दें कि आराधना-सभाएँ घरेलू क्षेत्र में होती थीं, किसी सार्वजनिक स्थान पर नहीं। इसलिए यह स्पष्ट नहीं है कि अध्याय का शेष भाग आराधना-सभाओं में या किसी सार्वजनिक वातावरण में आचरण के लिए निर्देश देता है, और शेष खंड की विषय-वस्तु भी "सार्वजनिक आराधना" के संदर्भ में मुश्किल से ही बैठती है, विशेष रूप से बच्चे के जन्म का उल्लेख।** दूसरी समस्या स्त्रियों के पहनावे और भले कामों (2:9-10) के बारे में पौलुस की चिंता को आराधना-सभा की प्रार्थना तक सीमित करना है। स्त्रियों को दिए गए निर्देश स्पष्ट रूप से पुरुषों को दिए गए निर्देशों के समानांतर सोचे गए हैं, "पुरुष/स्त्रियाँ" की समरूपता और क्रिया-विशेषण ὡσαύτως ("उसी प्रकार") के कारण, जो स्त्रियों के निर्देशों को पुरुषों के निर्देशों से जोड़ता है (पद 8)। पर शालीनता की, शेख़ी से बचने की और भले काम करने की चिंता केवल आराधना में प्रार्थना तक सीमित नहीं लगती। 5:6 में इसे इफिसुस की विधवाओं की एक समस्या से जोड़ा गया है: परमेश्वर के भय और पवित्रता में शांत और चैन भरे जीवन के बजाय विलासिता और भोग-विलास का जीवन। वास्तव में यह स्त्रियों के आचरण के बारे में एक सामान्य चिंता को प्रतिबिंबित करता है, जिसकी चर्चा संस्कृति में अक्सर होती थी: इन विषयों पर क़ानून तक बनाए गए थे। इसके अतिरिक्त, यदि यहाँ बात आराधना में प्रार्थना के समय स्त्रियों के पहनावे की होती, तो पौलुस ने बालों को कलात्मक ढंग से गूँथने पर रोक लगाने (1 तीमुथियुस 2:9) के बजाय सभी "परमेश्वर की कलीसियाओं" की उस सामान्य रीति को क्यों नहीं दोहराया कि स्त्रियाँ प्रार्थना करते समय घूँघट पहनती हैं (1 कुरिन्थियों 11:16)? तीसरी समस्या: स्त्रियों को दिया गया निर्देश कभी-कभी एक दूसरी चिंता के रूप में समझा जाता है जिसकी बात पौलुस करता है, जो प्रार्थना की क्रिया से अलग है, पर फिर भी सार्वजनिक आराधना तक सीमित है। पर उसे 2:1-3 के संदर्भ में बेहतर समझा जा सकता है; भड़कीला और अशालीन पहनावा और साज-सज्जा 2:2 में प्रार्थना के लक्ष्यों के सीधे विरुद्ध काम करते हैं: "पूरी भक्ति और पवित्रता से शांति और चैन का जीवन"। 2:10 में पौलुस को इस बात की चिंता है कि जो स्त्रियाँ परमेश्वर का भय मानने का दावा करती हैं, वे प्रा-

र्थना के लक्ष्यों के अनुरूप आचरण करें। यह वास्तव में पुरुषों को दिए गए निर्देशों का समानांतर है। क्रोध और विवाद भी 2:2 में प्रार्थना के लक्ष्य को हानि पहुँचाते हैं: शांत और चैन भरा जीवन। तब प्रार्थना पौलुस का वह उपचार होती जिससे इफिसुस के पुरुष और स्त्रियाँ उन लक्ष्यों के विरुद्ध काम करना छोड़ें जो परमेश्वर को भाते हैं: शांत और चैन भरा जीवन, पवित्रता और भक्ति। **1 तीमुथियुस 2:9-10 की पृष्ठभूमि के रूप में आराधना-सभा के परिदृश्य के साथ चौथी समस्या यह है कि 2:11 में बहुवचन "पुरुषों" और "स्त्रियों" से एकवचन "स्त्री" (γυνή) पर परिवर्तन होता है, और 2:12 में पौलुस उन दो बातों पर रोक लगाता है जो एक "स्त्री" एक "पुरुष" (ἀνδρός) के साथ कर सकती थी।** संदर्भ में एकवचन पर यह परिवर्तन ध्यान खींचता है, क्योंकि वह एक ढर्रे को तोड़ता है, और "पुरुष" के लिए एकवचन का प्रयोग ऐसी भाषा से मेल नहीं खाता जो कलीसिया की सभा या किसी अन्य समूह को संबोधित करती हो। **पौलुस किसी स्त्री के पुरुषों के एक समूह को शिक्षा देने की, या स्त्रियों के पुरुषों के समूहों को शिक्षा देने की बात कर सकता था, पर किसी सभा में एक स्त्री के "एक पुरुष" को शिक्षा देने की बात करना सामान्य नहीं है। बल्कि एकवचन का प्रयोग एक स्त्री और एक पुरुष के बीच निजी व्यवहार का संकेत देता है। यूनानी-रोमी संस्कृति में एक स्त्री और एक पुरुष के बीच निजी व्यवहार सबसे अधिक परिवार के सदस्यों के बीच होता, और इस खंड में बहुत कुछ ऐसा है जो एक घरेलू संदर्भ की ओर संकेत करता है।** अधिकांश टीकाकार एकवचन के प्रयोग के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वह वहाँ हो ही नहीं, पर यह एक स्पष्ट व्याकरणिक चुनाव है जिसका अर्थ है, और यह संदर्भ के व्याकरण के और उस व्याकरण के विपरीत है जिससे किसी समुदाय को संबोधित किया जाता है। इस खंड की पृष्ठभूमि के रूप में आराधना के ढाँचे के साथ पाँचवीं समस्या जन्म (τεκνογονία) का उल्लेख और एक स्त्री के उद्धार (σωθήσεται) के लिए विशेष चिंता है (2:15), और आराधना-व्यवस्था और निषेधों के लिए इसकी संदिग्ध प्रासंगिकता। "फिर भी वह बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी" (σωθήσεται δὲ διὰ τῆς τεκνογονίας) की कई व्याख्या-संभावनाएँ (और वैकल्पिक अनुवाद) हैं, **पर इनमें से कोई भी आराधना में पुरुषों और स्त्रियों के आचरण के बारे में किसी चर्चा के निष्कर्ष के रूप में अर्थपूर्ण नहीं है।** इसलिए 2:1-15 के ढाँचे के रूप में आराधना-सभा का चुनाव या धारणा ऐसा संदर्भ देने के बजाय, जो वचन-भाग की कठिन विशेषताओं को समझाए, विरोधाभास और असंबद्धता को ही बढ़ाती है। वचन-भाग का आरंभ संकेत देता है कि पौलुस की पत्री झूठी शिक्षा के बारे में है, पर यदि यहाँ बात आराधना में आचरण की है, तो यह एक विषयांतर है, और वह अध्याय 4-6 में झूठी शिक्षा के विषय पर लौटता है। कुछ व्याख्याकार अनावश्यक रूप से और बिना सोचे-समझे 2:11-15 को एक और विषयांतर ठहरा देते हैं। इस खंड का व्याकरण और उसका विस्तार, दोनों संकेत देते हैं कि यह एक मुख्य बिंदु है, क्योंकि यह पुरुषों और स्त्रियों को दिए गए निर्देशों से अधिक विस्तृत है। इसके अतिरिक्त यह झूठी शिक्षा और कलीसिया में स्त्रियों के आचरण की कुछ ऐसी समस्याओं की सीधे बात करता है जिनकी चर्चा पत्री में आगे की गई है। 2:1 का तार्किक जोड़, παρακαλῶ οὖν πρῶτον ("इसलिए मैं सबसे पहले आग्रह करता हूँ"), खंड को पहले की बातों से जोड़ता है, बजाय इसके कि कोई दरार और किसी दूसरी चिंता की ओर परिवर्तन पैदा करे। यह संकेत देता है कि 2:1-15 पत्री के विषय को, अर्थात् झूठी शिक्षा के सुधार को (1:3), आगे विकसित करता है।

9.1.6 "प्रभुता करना" शब्द का अर्थ (αὐθεντέω / authenteo)

लिंग-प्रश्न के संबंध में 1 तीमुथियुस 2:11-15 की व्याख्या के सबसे समस्याग्रस्त पहलुओं में से एक 2:12 में αὐθεντέω शब्द का अर्थ है: "मैं अनुमति नहीं देता कि कोई स्त्री शिक्षा दे या किसी पुरुष पर αὐθεντεῖν करे।" यह शब्द एक हापाक्स लेगोमेनॉन (Hapaxlegomenon) है (यह नए नियम में केवल एक बार आता है), और यह यूनानी भाषा में इस क्रिया के सबसे पहले ज्ञात प्रयोगों में से एक है, यद्यपि Thesaurus Linguae Graecae (TLG)

डेटाबेस में इसके तीन सौ से अधिक बाद के प्रयोग दर्ज हैं। 1979 में Catherine Kroeger (कैथरीन क्रोगर) ने एक लेख लिखा, जिसने αὐθεντέω के "अधिकार रखना" अनुवाद पर प्रश्न उठाया और इस क्रिया पर एक चर्चा आरंभ की जो आज तक चल रही है। इस प्रश्न में कि क्रिया का अर्थ क्या है और उसका अनुवाद कैसे किया जाए या उसे कैसे समझा जाए, कुछ मुख्य प्रश्न शामिल हैं: अधिकार के प्रयोग से इस क्रिया का क्या संबंध है? **क्या यह क्रिया अपमानजनक, तटस्थ या सकारात्मक है? अपने संबंधित शब्दों से इस क्रिया का क्या संबंध है? इन प्रश्नों के उत्तर (कुछ अपवादों के साथ) दो खेमों में बँट जाते हैं। एक समूह αὐθεντέω का अनुवाद "अधिकार का प्रयोग करना" या "पर अधिकार रखना" के सकारात्मक या तटस्थ अर्थ में करता है; दूसरा समूह इसका अनुवाद नकारात्मक या अपमानजनक अर्थ में करता है, जैसे "दुरुपयोग करना", "दबदबा जमाना", "नियंत्रित करना" या "बल प्रयोग करना"।**

इस चर्चा से बाहर के बहुत-से लोग मान लेते हैं कि αὐθεντέω "पास्टर होना" के लिए एक पारिभाषिक शब्द है, क्योंकि स्त्रियों को पास्टर के पद से और पुरुषों के प्रति अन्य अगुवाई के कार्यों से बाहर रखने का यही मुख्य औचित्य है। पर TLG डेटाबेस में इस क्रिया के तीन सौ से अधिक प्रयोगों में से किसी ने भी ऐसा एक भी उदाहरण नहीं पहचाना है जिसमें यह किसी पास्टर या कलीसिया के कार्यकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति या समूह की किसी भी प्रकार की सद्भावपूर्ण पास्टरीय देखभाल को दर्शाती हो। H. Scott Baldwin (एच. स्कॉट बाल्डविन) ने इस मत के समर्थन में कि शब्द का अर्थ "अधिकार रखना" है, क्रिया के जिन बयासी प्रयोगों का उपयोग किया, उनमें एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जिसमें कोई पुरुष सेवा या कलीसिया-अगुवाई के संदर्भ में किसी दूसरे व्यक्ति या लोगों के समूह के प्रति ऐसा करता हो और उस क्रिया का सकारात्मक मूल्यांकन हुआ हो। जब क्रिया का कोई व्यक्तिवाचक कर्म या क्रिया को सहने वाला कोई व्यक्ति होता है, तो सहने वालों के साथ होने वाली क्रिया के प्रकार में एक पहचानने योग्य ढर्रा है (जब संदर्भ में सहने वाले या लक्ष्य का उल्लेख हो)। यूनानी शब्द-भंडार में αὐθεντέω क्रिया अनेक क्रियाओं को दर्शाती है, जो हत्या या हिंसा तक सीमित नहीं हैं। **पर जो लोग इन क्रियाओं के लक्ष्य होते हैं, उन्हें हानि पहुँचाई जाती है, उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें विवश किया जाता है, या कम से कम उनके अपने हित को निष्प्रभावी कर दिया जाता है, क्योंकि इन क्रियाओं में कर्ता की इच्छा को सहने वाले की इच्छा के विरुद्ध थोपना शामिल है, जो अपमान से लेकर प्राणघातक हिंसा तक जाता है।** αὐθεντέω के प्रयोग का (यहाँ "लागू किया गया बल" के रूप में अनूदित) एक रोचक उदाहरण खल्कीदोन की परिषद (451 ईस्वी) में Bassianos (बस्सियानोस) की एक शिकायत में मिलता है, जिसमें वह दावा करता है कि उसे एक अवैध प्रक्रिया द्वारा बिशप बनाया गया:

मुझे बल-पूर्वक बिशप नियुक्त किया गया! कलीसिया के नियम यहाँ स्पष्ट रूप से निर्णायक हैं। पिता कहते: "यदि कोई प्राथमिकता वाली प्रक्रिया है, तो वह यह है कि पद के लिए चुनाव कराया जाए और पीछे न हटा जाए।" ... मैं आपसे आग्रहपूर्वक विनती करता हूँ कि मेरी बात सुनें! जब यह निर्मम कार्य पूरा हुआ, तो वे बलपूर्वक मेरे कमरे में घुस आए और मुझे पकड़ लिया। और फिर हम याजक-पद के लिए प्रयत्नशील हुए। पर उन्होंने बल प्रयोग किया।

किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध विनाशकारी ढंग से विवश करना धर्मी न्याय में परमेश्वर की संप्रभुता का अधिकार है (सदोम और अमोरा और अधर्मी), और यह पूर्ण अधिकारियों और उन सरकारी अधिकारियों के लिए उचित माना जाता था जो दंड लागू करने वाले थे (उदाहरण के लिए जल्लाद); पर यदि यह वैध अधिकार के बिना होता है, तो यह लगभग हमेशा अनुचित है। **इसके अतिरिक्त, स्त्रियों के ऐसा करने पर रोक का अर्थ यह नहीं है कि पुरुषों के ऐसा करने को स्वीकृति दी गई है, जैसा अक्सर मान लिया जाता है।** वास्तव में 1 तीमुथियुस 2:12 का सबसे निकट का समानांतर वचन Chrysostomus (क्रिसोस्टोम) के कुलुस्सियों की पत्री पर दिए गए प्र-

वचनों में मिलता है, जहाँ वह पतियों को आदेश देता है कि वे अपनी पत्नियों पर αὐθεντεῖν न करें। Chrysostomus कहता है कि पति की भूमिका प्रेम करना और पत्नी की भूमिका आज्ञा मानना है। फिर वह कहता है: "इसलिए, क्योंकि तुम्हारी पत्नी तुम्हारे अधीन है, तुम αὐθεντεῖν न करो" (μὴ τοίνυν, ἐπειδὴ ὑποτέτακται ἡ γυνή, αὐθέντει)। इस खंड में Chrysostomus आदर्श पति की तुलना एक प्रेम करने वाले ἄρχων ("अगुवे/शासक") से करता है, और यहाँ जिस क्रिया की बात है, वह पति द्वारा क़ानूनी/सांस्कृतिक घरेलू प्रभुता का प्रेमपूर्ण प्रयोग नहीं हो सकती, बल्कि वह प्रेमपूर्ण घरेलू अधिकार की सीमा लाँघ जाती है; आज हम शायद "विवाह में हिंसा" शब्द का प्रयोग करते, जो फिर भी इस पितृसत्तात्मक संस्कृति में रोमी paterfamilias के अधिकारों के भीतर ही होता। ध्यान दीजिए कि Chrysostomus तो पति की भूमिका का वर्णन करने के लिए ἄρχων का प्रयोग करता है, पर पौलुस कभी नहीं। **बल्कि पौलुस αὐθεντέω शब्द का प्रयोग भूमिकाओं के उलट जाने के एक मामले में पतियों के प्रति पत्नियों के व्यवहार की आलोचना करने के लिए करता है, जिसमें पत्नी ऐसा अधिकार अपना लेती है जो किसी paterfamilias के अधिकार के समान है, और दुर्व्यवहारपूर्ण या नियंत्रित करने वाले ढंग से आचरण करती है। लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध विवश करना या उनके अपने हित की अनदेखी करना अधिकार के प्रयोग के अनेक यूनानी-रोमी और बाइबल के आदर्शों से मेल खाता है। यह अधिकार के उन अन्यजातीय आदर्शों (विशेष रूप से कैसर) से मेल खाता है, जिनका वर्णन यीशु मत्ती 20:25 में करता है: "अन्यजातियों के हाकिम [οἱ ἄρχοντες] उन पर प्रभुता करते हैं, और उनके बड़े लोग उन पर अत्याचारी बनकर अधिकार जताते हैं"।** पूर्ण अधिकार का ऐसा प्रयोग जीवन और मृत्यु के उस अधिकार से मेल खाता है जो रोमी paterfamilias को अपनी पत्नी और बच्चों पर प्राप्त था, और यूनानी संस्कृति में पति के अधिकारों से भी। यह परमेश्वर की संप्रभुता, मसीह की प्रभुता और न्यायी के रूप में उसकी भूमिका के बाइबल-आधारित अधिकार से भी मेल खाता है। यह क्रिया पोप ग्रेगरी के शासन-काल में पोप के अधिकार के लिए भी प्रयुक्त हुई। पर यह पति के किसी भी बाइबल-आधारित अधिकार से मेल नहीं खाती, और उस अधिकार से भी नहीं जिसका प्रयोग मसीही अगुवे पौलुस के धर्मविज्ञान के अनुसार कलीसिया के सदस्यों पर करते हैं। यह पौलुस के अगुवाई-आदर्श के भी विरुद्ध है और यीशु के आदर्श के भी। **इस क्रिया को केवल "अधिकार रखना" समझना और फिर उसकी ऐसी व्याख्या करना मानो वह सेवा करने वाली अगुवाई या पास्टरीय देखभाल का वर्णन करती हो, अत्यंत भ्रामक है।**

क्योंकि यही क्रिया और 1 तीमुथियुस 2:12 वे मुख्य स्रोत हैं जिनका उपयोग स्त्रियों को कलीसिया में अगुवाई के विभिन्न रूपों से बाहर रखने के लिए किया जाता है, इसलिए इस निषेध की समझ निर्णायक रूप से इस बात पर निर्भर करती है कि αὐθεντέω के लिए कौन-सा अर्थ चुना जाता है। कलीसिया का यह काम होना चाहिए कि वह ठोस कोशविज्ञान और भाषावैज्ञानिक पद्धति के आधार पर इस शब्द की समझ विकसित करे, ताकि इस चर्चा में सावधानी से आगे बढ़ा जा सके। आज प्रमाणों का ऐसा भंडार है जो 19वीं शताब्दी के उन शब्दकोशों को उपलब्ध नहीं था, जिन पर हम अपने शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने में निर्भर रहा करते थे; आज वे डेटाबेस, सर्च-इंजन और भाषावैज्ञानिक सिद्धांत उपलब्ध हैं जिनके द्वारा हम आगे बढ़ सकते हैं। कलीसिया उत्तरदायित्व की आयु तक पहुँच चुकी है; अब समय है कि αὐθεντέω शब्द के कारण स्त्रियों को कलीसिया के अगुवाई-पदों से बाहर रखने का उत्तरदायित्व (या दोष) स्वीकार किया जाए।

9.1.7 उत्पत्ति 2-3 के कथात्मक[1] सार का अर्थ

एक निर्णायक व्याख्यात्मक निर्णय इस प्रश्न से संबंधित है कि 1 तीमुथियुस 2:13-14 में उत्पत्ति 2-3 के कथात्मक सार को कैसे समझा जाए, जो स्त्री को सीखने की आज्ञा (2:11) और शिक्षा देने के निषेध (2:12) का कारण बताता है। कि यहाँ एक कारण दिया जा रहा है, यह पद 13 में संयोजक γάρ ("क्योंकि") दिखाता है; पर निषेध और पुराने नियम के वृत्तांत के बीच तार्किक संबंध का अनुमान लगाना पड़ता है। नया नियम पुराने नियम का उपयोग कैसे करता है, इस पर चर्चा ने हाल में ज़ोर पकड़ा है, और इससे यह समझने में सहायता मिलनी चाहिए कि पौलुस के लेख-संग्रह में या सामान्य रूप से नए नियम में कोई विषय-वस्तु, संकेत या उद्धरण किन-किन ढंगों से कार्य कर सकता है। **इस पर बढ़ती सहमति है कि नए नियम के लेखक पुराने नियम का उपयोग अनेक और कभी-कभी रचनात्मक ढंगों से करते हैं, बिना यह आवश्यक हुए कि वे उस वचन की उसके संदर्भ में व्याख्या करें या उसके लेखक के मूल अभिप्राय को बनाए रखें। पर क्योंकि यहाँ बात एक कथात्मक सार की है, हम निश्चित रूप से मान सकते हैं कि उसके संक्षिप्त, रहस्यमय सार की व्याख्या के लिए उत्पत्ति के वृत्तांत का सहारा लिया जाना चाहिए।**

कुछ लोग आश्वस्त हैं कि 1 तीमुथियुस 2:12 में "स्त्रियों के शिक्षा देने और पुरुषों पर अधिकार चलाने का निषेध" केवल इस वृत्तांत के कारण ही कलीसिया के लिए मानक है। उदाहरण के लिए Thomas Schreiner (थॉमस श्राइनर) दावा करते हैं: "1 तीमुथियुस 2:13 का हवाला दिखाता है कि पौलुस अपने निषेध को एक सर्वकालिक मानक में स्थापित करता है।" पर पौलुस का सृष्टि-वर्णन कोई सर्वकालिक मानक नहीं, बल्कि वृत्तांत का एक संक्षिप्त सार है: "पहले आदम बनाया गया, फिर हव्वा।" Schreiner का यह निष्कर्ष कि यह वृत्तांत "आदम की प्राथमिकता" दिखाता है, कुछ लोगों द्वारा मानक माना गया होगा, पर समय-क्रम के अन्य मामलों में पहले होना पौलुस के लिए कोई मानक नहीं था, और उसने उत्पत्ति के वृत्तांत से यह निष्कर्ष नहीं निकाला। निष्कर्ष निकालना पाठक पर छोड़ दिया गया है (जैसा वृत्तांतों की व्याख्या में सामान्य है), और संभवतः पत्र पाने वाला जानता था कि इस वृत्तांत का सामने की समस्या से क्या संबंध था। इसके अतिरिक्त, यह धारणा कि पौलुस **सर्वकालिक मानकों** (हर युग में मान्य व्यवस्थाओं) का हवाला केवल मानक प्रयोगों को आधार देने के लिए देता है, उस ढंग से बिलकुल मेल नहीं खाती जिससे वह पुराने नियम और अन्य स्रोतों का उपयोग करता है। **पौलुस विशेष से सामान्य निष्कर्ष निकालता है, और सामान्य को एक-एक मामले पर लागू करता है। उसने एक विशेष मामले का सामान्यीकरण किया, जब उसने व्यवस्थाविवरण 25:4 की इस आज्ञा को कि दाँवनेवाले बैल का मुँह न बाँधना, प्राचीनों के वेतन पर लागू किया (1 तीमुथियुस 5:18; तुलना कीजिए 1 कुरिन्थियों 9:7-9)। दूसरी ओर उसने सृष्टि के वृत्तांत से "सर्वकालिक मानकों" का उपयोग उस सांस्कृतिक प्रथा का समर्थन करने के लिए किया कि स्त्रियाँ कलीसिया में भविष्यद्वाणी और प्रार्थना करते समय घूँघट पहनें (1 कुरिन्थियों 11:3-16)।** उसने कुरिन्थुस की कलीसिया के कुछ सदस्यों को एक विशेष, छोटे-से क़ानूनी मामले में निर्णय देने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि भविष्य में "प्रभु के लोग संसार का न्याय करेंगे" (1 कुरिन्थियों 6:1-3)। **यह दावा करना विचित्र है कि पौलुस या कोई और अवसर-विशेष या संस्कृति-विशेष प्रयोगों को सृष्टि के वृत्तांत की या पुराने नियम के अन्य वचनों की विषय-वस्तु से पुष्ट नहीं कर सकता था,** और यह व्याख्या-शास्त्र और प्रवचन-कला की हमारी आज की प्रथा के भी विरुद्ध है, जिसके द्वारा हम आदतन पवित्रशास्त्र के कालातीत सिद्धांतों के प्रासंगिक और समयानुकूल प्रयोग खोजते हैं।

इस आज्ञा के समर्थन में कि "एक स्त्री" सीखे, और इस आज्ञा के समर्थन में कि एक स्त्री को एक पुरुष के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए, पौलुस ने सृष्टि-वृत्तांत के कुछ भागों का जो सारांश दिया है, उसे इस

रूप में समझना आवश्यक नहीं कि वह स्त्रियों के लिए कलीसिया की सभा में शिक्षा देने या अगुवाई करने पर एक सर्वमान्य, स्थायी प्रतिबंध है (1 तीमुथियुस 2:11-14)। इसके बजाय पौलुस सीधे इफिसुस की स्त्रियों के बीच झूठी शिक्षा की समस्याओं से निपट रहा हो सकता है। वह किसी हानिकारक, जनसामान्य में फैले मिथक को उसके सामने सही वृत्तांत रखकर सुधार रहा हो सकता है; इसमें प्रतिरूप-विद्या (टाइपोलॉजी) शा-मिल हो सकती है; और/या यह पत्नियों और पतियों के लिए एक सुधारात्मक निर्देश या व्याख्या हो सकती है। **यदि पाठ को वैसे ही पढ़ा जाए जैसे वह स्वयं को प्रस्तुत करता है, तो कई बिंदु संकेत करते हैं कि सृष्टि का यह सारांश उन समस्याओं को सुधारने के लिए है जिनका सामना तीमुथियुस कर रहा था।** पहला, झूठी शिक्षा का संदर्भ है, जो उन मिथकों से संबंधित थी जिन्हें बूढ़ी स्त्रियाँ सुनाती थीं (4:7; तुलना कीजिए 1:4)। **संभवतः पौ-लुस यहाँ संक्षेप में किसी लोकप्रिय मिथक की विषय-वस्तु को सुधार रहा है।** दूसरा, इफिसुस में स्त्रियों से जुड़ी अन्य विशेष समस्याएँ भी थीं जिन्हें सुधारना आवश्यक था। इनमें वस्त्र और जीवन-शैली में अनुचित आचरण (2:9-10; 5:6,15), दूसरी स्त्रियों के बीच गपशप और बातें फैलाना तथा कहानियाँ या मिथक फैलाना (4:7; 5:13), और झूठी शिक्षाओं को अपनाना – जिनमें यौन-संबंध, विवाह और बच्चों के विषय में झूठी शिक्षाएँ भी शामिल थीं (4:3; तुलना कीजिए 5:14; 2 तीमुथियुस 3:6-7) – सम्मिलित हैं। तीसरा, ये प्रतिबंध एक नई, ज़ोर देकर कही गई जानकारी की तरह पढ़े जाते हैं, और वे पहले की पत्रियों की किसी आज्ञा या प्रतिबंध को दोहराते नहीं। पाठ में दी गई जानकारी पर आधारित उन अधिकांश सुसंगत पुनर्रचनाओं के अनुसार, जो 1 तीमुथियुस को पौलुस के जीवन में स्थान देती हैं, तीमुथियुस एक दशक से अधिक समय तक पौलुस का सबसे निकट साथी और पौलुस की रीतियों और परंपराओं का एक भरोसेमंद शिक्षक रहा था। चाहे पत्री काल्पनिक हो, सार्वजनिक हो या व्यक्तिगत, इस पत्री में इन प्रतिबंधों का होना हर उस व्यक्ति के लिए एक पहेली है जो यह दावा करता है कि इस अंश का उद्देश्य अन्यजातियों के बीच मिशन की सभी कलीसियाओं में पौलुस की रीतियों को प्रस्तुत करना है। चौथा: **क्योंकि पाठ संकेत देता है कि यह एक व्यक्तिगत पत्र है, इसलिए यह ऐसे सर्वकालिक कथन करने के लिए सबसे कम संभावित संदर्भ है, जो पौलुस के शेष लेखों में आत्मिक वरदानों और अगुवाई के विषय में उसकी शिक्षाओं के सामान्य प्रयोग को निरस्त कर दें।** स्त्रियों के शिक्षिकाएँ होने और अगुवाई की सेवा पर स्पष्ट प्रतिबंध घोषित करने के लिए रोमियों को लिखी पौलुस की पत्री जैसा कोई दस्तावेज़ अधिक तर्कसंगत स्थान होता। रोमियों की पत्री पहले का दस्तावेज़ थी और एक ऐसी कलीसिया को लिखी गई थी जिसकी स्थापना पौलुस ने नहीं की थी और जहाँ वह अभी तक गया भी नहीं था; उसमें वह रोमियों 12:3-8 में शिक्षा और सेवा पर ध्यान केंद्रित करता है। **एक रोमी स्त्री रोमियों 12:7-8 को शिक्षा देने या अगुवाई करने का दायित्व समझती, यदि वह मानती कि उसे इसका वरदान मिला है; और रोमियों 16 के अनुसार रोम की कलीसिया में स्त्रियाँ अपने कार्य के कारण विशिष्ट थीं। यदि 1 तीमुथियुस 2:11-12 में दिए गए निर्देश पौलुस की कलीसियाओं की कोई मूलभूत रीति होते, तो रोमियों 12 ही वह स्थान होता जहाँ लिंग पर आधारित ऐसी योग्यताओं को बताया जाता। सारांश में कहा जा सकता है कि यह मानने का कोई बाध्यकारी कारण नहीं है कि पौलुस सृष्टि-वृत्तांत की पुनर्प्र-स्तुति का उपयोग कलीसिया की इक्की-दुक्की समस्याओं को सुधारने या उनके विषय में शिक्षा देने के लिए नहीं कर सकता; वह सृष्टि-वृत्तांत का उपयोग एक सांस्कृतिक रीति की शिक्षा देने के लिए भी तो करता है (1 कुरिन्थियों 11:3-16), और अन्य सर्वकालिक मानदंडों को भी लक्षित रूप से लागू करता है।**

9.1.8 सारांश

1 तीमुथियुस के स्वरूप और पौलुस के लेखकत्व के विषय में व्याख्या-संबंधी निर्णय 1 तीमुथियुस 2:11-15 की व्याख्या में सीधी भूमिका निभाते हैं। हम आगे तब बढ़ते हैं जब हम पाठ पर भरोसा करते हैं और उसे वैसे ही पढ़ते

हैं जैसे वह स्वयं को प्रस्तुत करता है। पाठ संकेत देता है कि यह पौलुस द्वारा तीमुथियुस को लिखा गया एक व्यक्तिगत पत्र है। पत्री को समग्र रूप में और उसके भागों को ऐसे ढंग से समझा, विश्लेषित और व्याख्यायित किया जाना चाहिए जो पाठ के दावों, पपाइरी (पपायरस-लेखों) में मिलने वाली समानताओं, पत्र-सिद्धांत और भाषा-वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुरूप हो – ये सब हमें बताते हैं कि एक दूसरे को भली-भाँति जानने वाले दो व्यक्तियों के बीच के व्यक्तिगत पत्र में भाषा कैसे काम करती है। हमें अपेक्षा करनी चाहिए कि पत्री बहुत हद तक परिस्थिति से जुड़ी हो, जिसमें संदर्भ की एक महत्वपूर्ण भूमिका हो। यद्यपि हम इस दृष्टि से हानि में हैं कि हम वह सब नहीं जानते जो पौलुस और तीमुथियुस दोनों जानते थे; फिर भी पाठ के सूक्ष्म अध्ययन से हम संदर्भ और अन्य जानकारी के विषय में बहुत कुछ सीख सकते हैं। **हमें ऐसी धारणाओं, व्याख्याओं या परिदृश्यों को त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए जो सीधे पाठ से या पौलुस की रीति/धर्मविज्ञान से नहीं निकलते, विशेषकर तब जब वे सुसंगति या संबद्धता में कोई योगदान नहीं देते। 1 तीमुथियुस 2:1-15 के मामले में हमें यह प्रचलित धारणा एक ओर रख देनी चाहिए कि प्रार्थना की रीति किसी आराधना सभा या सभा की ओर संकेत करती है, और फिर 1 तीमुथियुस 2:1-15 को पत्री के घोषित उद्देश्य के प्रकाश में पढ़ना चाहिए।** अन्य निर्णायक निर्णय हैं: αὐθεντέω का विवादित अर्थ, और यह कि सृष्टि और पतन की ओर संकेत 1 तीमुथियुस 2:11-12 में एक स्त्री को सीखने की आज्ञा का, और "एक पुरुष" के प्रति एक स्त्री के व्यवहार से संबंधित प्रतिबंध का किस प्रकार समर्थन करते हैं। एक निर्णय, जिस पर व्याख्याकार कम विचार करते हैं, यह है कि 1 तीमुथियुस 2:15 के कथन "बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाना" का संदर्भ से तार्किक संबंध क्या है; परंतु इस अंश को उसके संदर्भ में सुसंगत रूप से पढ़ने के लिए इसे इन अन्य निर्णयों के साथ जोड़ना आवश्यक है।

लेखकत्व के विषय में विचार चाहे जो हों, अधिकतर लोग पाठ को समग्र रूप में, और विशेष रूप से 1 तीमुथियुस 2:9-15 को, ऐसे पढ़ते हैं मानो वे काल्पनिक हों, और उस जानकारी की प्रासंगिकता को अनदेखा कर देते हैं जो संदर्भ और उद्देश्य प्रदान करती है। परंतु यदि पत्री में हमारी रुचि संभावित इतिहास की पुनर्रचना करने या अपने धर्मविज्ञान का समर्थन और पुष्टि करने के बजाय संदेश के अर्थ में है, तो पाठ को वैसे ही पढ़ना चाहिए जैसे वह स्वयं को प्रस्तुत करता है, ताकि यह पहचाना जा सके कि लिखे जाते समय वह कौन सा प्रभाव या परिणाम उत्पन्न करना चाहता था।

9.2 पत्री का उद्देश्य

यदि हम 1 तीमुथियुस को एक वास्तविक पत्र मानें, तो हम पत्री का उद्देश्य पत्री के मुख्य भाग के आरंभ में खोजेंगे। जॉन व्हाइट (John White) के अनुसार "पत्र के मुख्य भाग का आरंभ वह बिंदु है जहाँ सामान्यतः पत्र लिखने के मुख्य कारण बताए जाते हैं। [...] पत्र का आरंभ वह नींव रखता है जिस पर आगे की विषय-वस्तु बनाई जा सकती है।"

9.2.1 पत्री का घोषित उद्देश्य (1:3-20)

पत्री का आरंभ 1:3-20 में है, जहाँ पौलुस द्वारा तीमुथियुस को पहले दिया गया यह दायित्व – कि वह कुछ लोगों को आज्ञा दे कि वे झूठी (अन्य) शिक्षाएँ न फैलाएँ – 1:3-4 में दोहराया गया है और अध्याय के शेष भाग में विस्तार से बताया गया है: "जैसे मैंने मकिदुनिया जाते समय तुझसे विनती की थी कि इफिसुस में रह, ताकि तू कुछ लोगों को आज्ञा दे कि वे अन्य शिक्षा न दें, और न कहानियों और अनंत वंशावलियों में मन लगाएँ, जिनसे परमेश्वर के उस

प्रबंध की उन्नति नहीं होती जो विश्वास में है, बल्कि विवाद अधिक उत्पन्न होते हैं।" इन निर्देशों की पुष्टि 1:18 में की गई है, जहाँ इन्हीं निर्देशों के आधार पर तीमुथियुस को "अच्छी लड़ाई लड़ने" का दायित्व सौंपा गया है।

9.2.2 इफिसुस में झूठी शिक्षा का स्वरूप

यदि यह एक सार्वजनिक पत्र होता, तो लेखक संभवतः पत्री के आरंभ में झूठी शिक्षा और उसके शिक्षकों का सटीक वर्णन देता। परंतु लेखक केवल चेतावनी देता है और उस सत्य की दुहाई देता है जो पहले से ज्ञात और दिया हुआ है। सौभाग्य से इफिसुस की झूठी शिक्षाओं के स्वरूप के विषय में कुछ संकेत मिलते हैं, जो अध्याय 4 से 6 में हैं, और उन्हें एकत्र करके व्यवस्थित किया जा सकता है, यद्यपि पौलुस शिक्षाओं की विषय-वस्तु की अपेक्षा उनके प्रभावों पर अधिक ध्यान देता है। यदि झूठी शिक्षाओं के स्वरूप का वर्णन पत्री की भूमिका में होता, तो इससे पत्री के उद्देश्य और पत्री में आगे के विकास के बीच का तार्किक संबंध स्पष्ट हो जाता। परंतु यदि यह एक व्यक्तिगत पत्र है, तो पौलुस को तीमुथियुस को वे विवरण बताने की आवश्यकता नहीं थी जो किसी कली-सियाई या सार्वजनिक पत्र में आवश्यक होते, क्योंकि वह झूठी शिक्षा की विषय-वस्तु, झूठे शिक्षकों की पहचान, और उन समस्याओं को पहले से जानता था जो शिक्षकों के कारण और फैल रही शिक्षा की विषय-वस्तु के कारण उत्पन्न हो रही थीं।

यद्यपि कुछ लोग झूठी शिक्षाओं को **एक** विधर्म के रूप में समेट सकते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि विधर्म के कम से कम दो अलग-अलग रूप या प्रकार पहचाने जा सकते हैं। **कुछ समस्याओं को विशेष रूप से पुरुषों की, और अन्य को विशेष रूप से स्त्रियों की समस्याओं के रूप में पहचाना जा सकता है।**

9.2.2.1 पुरुषों के बीच झूठी शिक्षाएँ

पुरुषों के बीच झूठी शिक्षाओं और रीतियों की पहचान पौलुस के विरोध, क्रोध, झगड़े और कलीसिया का पैसे के लिए उपयोग करने से होती प्रतीत होती है, जैसा 1 तीमुथियुस 6:3-5 में कहा गया है:

"यदि कोई और ही प्रकार की शिक्षा देता है और हमारे प्रभु यीशु मसीह की खरी बातों और उस शिक्षा को नहीं मा-नता जो भक्ति के अनुसार है, तो वह घमंड से फूल गया है और कुछ नहीं जानता, बल्कि उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिनसे डाह, झगड़े, निंदा, बुरे संदेह, और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े-झगड़े उत्पन्न होते हैं जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है और जो सत्य से विहीन हो गए हैं, और जो समझते हैं कि भक्ति लाभ का साधन है।"

प्रार्थना के विषय में पुरुषों को दिए गए निर्देश 2:1-7 में प्रार्थना के सामान्य निर्देशों में समाए हुए हैं। प्रार्थना का उद्दे-श्य यह है कि वह अन्यजातियों के बीच पौलुस के मिशन का समर्थन करे। मार्शल (Marshall) टिप्पणी करते हैं कि परमेश्वर की इस इच्छा पर ज़ोर कि सबका उद्धार हो, "लगभग विवादात्मक स्वरूप रखता है – [यह] संकेत देता है कि इस विचार का कुछ विरोध था।" पौलुस के मिशन का विरोध बहुत संभवतः व्यवस्था के विषय में यहूदी शिक्षा से जुड़ा है, जिसे पौलुस 1:7-11 में संक्षेप में सुधारता है। फिर 2:8 में पुरुषों को स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया है कि वे "बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथ उठाकर प्रार्थना करें"। इस प्रकार 6:3-5 के अनुसार जो लोग और ही प्रकार की शिक्षा देते हैं, उनकी मुख्य विशेषताएँ पुरुषों को दिए गए निर्देशों के साथ निकट संबंध में दिखाई देती हैं – धन कमाने की धुन को छोड़कर। परंतु यही गुण – हिंसा, झगड़ालूपन और धन का लोभ – 3:3 में अध्यक्षों की योग्यताओं में वर्जित किए गए हैं, और धन के लालच की बात पुरुष सेवकों (डीकनों) की योग्यताओं (3:8) में भी की गई है।

9.2.2.2 स्त्रियों के बीच झूठी शिक्षाएँ

स्त्रियों के बीच झूठी शिक्षाओं में कुछ समस्याग्रस्त रीतियाँ शामिल हैं, जो झूठे शिक्षकों द्वारा धोखा खाने से उत्पन्न होती हैं, और मिथकों, वंशावलियों (γενεαλογίαι) तथा विनाशकारी बातों का फैलाव भी, जो घर-घर पहुँचाई जाती थीं। अंतिम दिनों में झूठी शिक्षाओं के विषय में 4:1-5 में पौलुस की चेतावनियों को इफिसुस की समस्याओं के लिए प्रासंगिक माना जाना चाहिए, क्योंकि तीमुथियुस को निर्देश दिया गया है कि वह इन विषयों में लोगों को समझाए, और क्योंकि उनका स्त्रियों के बीच – विशेषकर विधवाओं के बीच – की समस्याओं से सीधा संबंध है:

[1 तीमुथियुस 4:1-5] परंतु आत्मा स्पष्ट रूप से कहता है कि आनेवाले समयों में कुछ लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से भटक जाएँगे; यह उन झूठ बोलनेवालों के कपट के कारण होगा जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है, जो विवाह करने से रोकेंगे और उन भोजन-वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए सृजा कि विश्वासी और सत्य को पहचाननेवाले उन्हें धन्यवाद के साथ ग्रहण करें। क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर वस्तु अच्छी है, और कोई वस्तु अस्वीकार करने योग्य नहीं, यदि वह धन्यवाद के साथ ग्रहण की जाए; क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा पवित्र हो जाती है।

झूठी शिक्षा के मुख्य तत्व, जो इफिसुस के संदर्भ में बार-बार सामने आते हैं, ये हैं: स्त्रियों को जानबूझकर धोखा देना, इस धोखे में दुष्टात्मिक गतिविधि की ओर संकेत, और विवाह का निषेध – जिसमें विवाहित स्त्रियों के बीच ब्रह्मचर्य को बढ़ावा देना भी शामिल रहा हो सकता है। 2 तीमुथियुस 3:6-7 में, झूठे शिक्षकों की इतनी मिलती-जुलती आलोचना में कि हम मान सकते हैं कि वह उन्हीं समस्याओं की बात कर रहा है, पौलुस इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करता है कि वे घरों की स्त्रियों को निशाना बनाते और उन्हें बहकाते हैं: "क्योंकि इन्हीं में से वे लोग हैं जो घरों में दबे पाँव घुस आते हैं और उन छिछोरी स्त्रियों को वश में कर लेते हैं जो पापों से दबी हैं और नाना प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं, जो सदा सीखती तो रहती हैं, पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुँचतीं।" इसके अतिरिक्त 1 तीमुथियुस 5:13-15 में युवा विधवाओं का वर्णन करते हुए पौलुस उनमें से कुछ की आलोचना करता है, क्योंकि वे "पहले ही बहककर शैतान के पीछे हो ली हैं"। **ब्रह्मचर्य की शिक्षा ने विवाह की संस्था और बच्चे जनने के मूल्य और जोखिम के विषय में उनके दृष्टिकोण को प्रभावित किया हो सकता है। इसका संबंध कुछ विधवाओं के फिर से विवाह न करने के इरादे से हो सकता है। झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं ने उन स्त्रियों को आकर्षित किया हो सकता है जो प्रसव के भारी जोखिमों से पहले ही भयभीत थीं और यौन-संबंध से दूर रहकर, और इस प्रकार बच्चे जनने से इनकार करके, पतन के प्रभावों को उलटने का प्रयास कर रही थीं। यह विवाह को अस्वीकार करके या विवाह के भीतर ब्रह्मचारी रहकर हो सकता था।**

ब्रह्मचर्य को बढ़ावा देने ने भली-भाँति "मुक्तिवादी प्रवृत्तियों" को प्रोत्साहित किया हो सकता है, जो वस्त्र और जीवन-शैली में व्यक्त हो सकती थीं। अन्य समस्याओं के विपरीत, असंयमित वस्त्रों का प्रश्न 2:9-10 में ही उठा दिया गया है। पौलुस स्त्रियों के लिए वांछित संयमी और उचित वस्त्रों की तुलना उस असंयमी शैली से करता है जिससे बचना है, जिसमें बाल गूँथने की भव्य शैलियाँ, सोना, मोती और महँगे वस्त्र शामिल थे। 5:6 में पौलुस इफिसुस की विधवाओं के बीच एक समस्या की ओर संकेत करता है, जिसे इसी प्रकार के असंयमी आचरण के रूप में चित्रित किया जा सकता है: "परंतु जो विधवा भोग-विलास का जीवन [σπαταλῶσα ζῶσα] बिताने का प्रयास करती है, वह जीते जी मरी हुई है।" जैसा फ़िलिप टाउनर (Philip Towner) कहते हैं, यह "स्पष्ट रूप से उन स्त्रियों की याद दिलाता है जिनका चित्रण 2:9 में किया गया है"। वे सारांश देते हैं: **"इस प्रकार पद 9-10 का पूरा उपदेशात्मक भाग (पेरैनेसिस, उपदेश-वचन) धनी मसीही पत्नियों के एक समूह के लिए एक चुनौती है, जिनके लिए नई रोमी स्त्री की उभरती प्रवृत्ति – बाहरी प्रदर्शन पर उसके ज़ोर और शालीनता के सांस्कृतिक मान-**

दंडों की अस्वीकृति के साथ – एक प्रबल आकर्षण बन गई थी।" स्त्रियों का इस प्रकार का असंयमी आचरण यूनानी-रोमी संस्कृति में बहुत चिंता का विषय था, और असंयमी या भड़कीले वस्त्रों पर प्रतिबंध कभी-कभी कानून द्वारा लगाया जाता था। हम 1 पतरस 3:1-7 में भी यूनानी-रोमी मूल्यों को दर्शाने वाली ऐसी ही आलोचनाएँ देखते हैं; इसलिए असंयमी वस्त्रों की चिंता एक ऐसी समस्या को दर्शाती है जिसका प्रार्थना के विषय से कोई संबंध नहीं। यह तथ्य कि इफिसुस की विधवाएँ संभवतः विलासिता के ऐसे प्रदर्शन में पड़ सकती थीं, उस स्वतंत्रता, धन और नियंत्रण (केवल अपने ऊपर ही नहीं, बल्कि संभावित बच्चों पर भी) की ओर संकेत कर सकता है, जिसे वे छोड़ना नहीं चाहती थीं। **यद्यपि स्त्रियों को सार्वजनिक शिक्षा के दुरुपयोग के लिए अलग से चिह्नित नहीं किया गया है, फिर भी उनकी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस बात के लिए आलोचना की गई है कि वे प्रभावशाली वृत्तांत (मिथक और वंशावलियाँ) दोहराती हैं और घर-घर गपशप और निंदा फैलाती हैं। यह एक बड़े पैमाने पर लिंग के आधार पर बँटी संस्कृति में स्त्रियों के बीच के एक बहुत वास्तविक सामाजिक ढर्रे को दर्शाता है, जिसमें स्त्रियाँ स्त्रियों के साथ बातचीत करती, सीखती और मेल-जोल रखती हैं। स्त्रियों का नेटवर्क वह मुख्य मार्ग था जिससे समाचार फैलते थे और समुदाय में संचार होता था। तीमुथियुस को जिन समस्याओं का समाधान करना है, उनमें मिथकों और वंशावलियों के फैलाव को "सम्मान का स्थान" मिलता है: पत्री के आरंभ में 1:4 में उसे झूठी शिक्षा के बराबर रखा गया है।** पौलुस को स्पष्ट रूप से डर है कि तीमुथियुस भी इन कहानियों से प्रभावित हो सकता है, क्योंकि 4:7 में वह उससे आग्रह करता है कि "उन अभक्ति की कहानियों से दूर रह, जिन्हें बूढ़ी स्त्रियाँ [γραώδεις] आगे सुनाती हैं"। **ऐतिहासिक रूप से बूढ़ी स्त्रियाँ अक्सर संस्कृति की कथावाचिकाएँ होती हैं, और वे संस्कृति को मिथकों, परी-कथाओं और परंपराओं के द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे पहुँचाती हैं, जो चूल्हे के पास और सोने के समय दोहराई जाती हैं।** कैरोलिन ओसिएक (Carolyn Osiek) और मार्गरिट मैकडोनल्ड (Margaret MacDonald) कहती हैं: "यह अनुमान लगाया गया है कि क्योंकि मौखिक संस्कृतियों में अधिकांश शिक्षा कहानियाँ सुनाकर दी जाती है, इसलिए इन मंडलियों में सुनाई गई शिक्षाप्रद कहानियाँ अंततः **अप्रामाणिक (अपोक्रिफ़ल)** सुसमाचारों और प्रेरितों के कार्यों के रूप में सामान्य परंपरा में पहुँच गईं।" **रिचर्ड (Richard) और कैथरीन क्रोगर (Catherine Kroeger) जैसे कुछ विद्वानों ने विश्वसनीय तर्क दिया है कि ये कहानियाँ विशेष रूप से यहूदी मिथकों से संबंधित हैं (तुलना कीजिए 1:7-11), जो सृष्टि और पतन की कहानी को दोबारा सुनाते और विकृत करते हैं।** यह देखते हुए कि नाग हम्मादी (Nag Hammadi) से एक ज्ञानवादी (ग्नॉस्टिक) दस्तावेज़ (संभवतः दूसरी शताब्दी का) मौजूद है जो ठीक यही करता है, स्त्रियों की मौखिक संस्कृति में संभवतः कोई पूर्ववर्ती मिथक रहा हो, और वंशावलियों का उल्लेख निश्चय ही यहूदी प्रभाव जैसा लगता है। फिर भी, अभक्ति की कहानियाँ और परंपराएँ भली-भाँति उन पारंपरिक स्थानीय मिथकों और परंपराओं को आगे बढ़ाने से भी संबंधित हो सकती हैं जो इफिसुस की मूर्तिपूजक संस्कृति में समाई हुई थीं और जिनमें समन्वयवाद (मिश्रण) शामिल था। इसके अतिरिक्त, पौलुस घर-घर गपशप या निंदा फैलाने को विधवाओं की एक समस्या के रूप में रेखांकित करता है (5:13), और निंदा करना ही वह एकमात्र आचरण था जो स्त्री सेवकों (डीकनों) के लिए वर्जित था (3:11)। रोचक बात यह है कि 3:11 में "निंदा करनेवाली" के लिए शब्द διάβολος है – स्त्रियों के बीच के एक समस्याग्रस्त आचरण का शैतान के साथ एक और छिपा हुआ संबंध।

9.2.2.3 सारांश

1 तीमुथियुस का उद्देश्य है "कुछ लोगों को आज्ञा देना कि वे झूठी शिक्षा न फैलाएँ और मिथकों तथा अनंत वंशावलियों पर ध्यान न दें" (1:3b-4)। कुछ पुरुष झूठी शिक्षाएँ फैला रहे थे, और झूठी शिक्षा के परिणाम पुरुषों के बीच हिंसा और झगड़े थे, जिनमें प्राथमिकता पैसा कमाने की थी – संभवतः सेवकाई के द्वारा।

इनमें से कुछ झूठे शिक्षकों को दुष्टात्मिक या शैतानी बताया गया है, क्योंकि वे स्त्रियों को निशाना बनाकर उन्हें बहकाते थे। वे उन्हें विवाह और बच्चे जनने से बचने की शिक्षा देते थे, और वस्त्र तथा जीवन-शैली में असंयमी और आडंबरपूर्ण आचरण के लिए प्रोत्साहित करते थे, जो पुरुषों की धन की लालसा का प्रतिरूप है – जो बहुत कुछ स्वास्थ्य, धन और समृद्धि के सुसमाचार जैसा लगता है। स्त्रियाँ समस्याग्रस्त वृत्तांतों का स्रोत भी थीं, जिनमें मिथक और वंशावलियाँ भी थीं और गपशप तथा निंदा भी, जो सब घर में चलती रहती थीं और घर-घर फैलती थीं – इस प्रकार स्त्रियाँ स्वयं "शैतान" (διάβολοι, निंदा करनेवालियाँ) बन गईं।

9.3 झूठी शिक्षा के प्रतिकार (2:1-15)

झूठी शिक्षा के स्वरूप और मिथकों तथा वंशावलियों के फैलाव को ध्यान में रखते हुए देखा जा सकता है कि 2:1-15 की तीनों इकाइयाँ उन समस्याओं के प्रतिकार प्रस्तुत करती हैं जिनसे तीमुथियुस संघर्ष कर रहा है। पुरुषों को प्रार्थना करने का निर्देश दिया गया है, स्त्रियों को संयम और शालीनता से वस्त्र पहनने का निर्देश दिया गया है, और स्त्रियों को घर में आत्मिक शिक्षा में लगना है।

9.3.1 पुरुषों के बीच झूठी शिक्षा का प्रतिकार (2:1-8)

जब पौलुस ने विश्वासियों से सब मनुष्यों के लिए – राजाओं और अधिकारियों के लिए भी – प्रार्थना करने को कहा, तो 2:3-7 के अनुसार उसका लक्ष्य यह था कि सब मनुष्य उद्धार पाएँ और सत्य की पहचान तक पहुँचें, जो परमेश्वर की इच्छा और पौलुस का सुसमाचार है। सार रूप में हर किसी से पौलुस के मिशन के लिए प्रार्थना करने को कहा गया है, जिससे प्रार्थना पौलुस के विरोध का प्रतिकार करती है। 2:2b में पौलुस लिखता है कि सबके लिए प्रार्थना का परिणाम यह हो "कि हम पूरी भक्ति और गरिमा के साथ शांति और चैन का जीवन बिताएँ"। यह परिणाम उसके ठीक विपरीत है जिसका सामना तीमुथियुस इफिसुस के पुरुषों और स्त्रियों के आचरण में कर रहा था। फिर 2:8 में, जैसा टाउनर (Towner) ध्यान दिलाते हैं, "पौलुस सभा पर लिंग के आधार पर अलग-अलग विचार करता है। घरेलू नियम-पट्टिका (Haustafel) की शैली में वह पहले पुरुषों [पतियों] को संबोधित करता है और उनसे अधिकारपूर्वक बात करता है।" पुरुष क्रोध और विवाद से मुक्त होकर पवित्र हाथ उठाएँ। इसलिए प्रार्थना झूठी शिक्षा के विरुद्ध पौलुस का पहला प्रतिकार है और पुरुषों की क्रोध और झगड़े की समस्याओं को संबोधित करती है।

9.3.2 स्त्रियों के लिए उचित वस्त्रों का प्रतिकार (2:9-10)

"पूरी भक्ति और गरिमा के साथ शांति और चैन के जीवन" (1 तीमुथियुस 2:2) के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए स्त्रियों को निर्देश दिया गया है कि वे भोग-विलास का जीवन जीने के प्रयास के प्रतिकार के रूप में संयमी और शालीन वस्त्र पहनें। 2:9 में "वैसे ही" (ὡσαύτως) संकेत देता है कि स्त्रियों को दिए गए निर्देश पुरुषों को दिए गए निर्देशों के समानांतर हैं, और 2:9 में पुरुषों को दिए गए 2:8 के निर्देशों वाली ही समापिका क्रिया "मैं चाहता हूँ" (βούλομαι) है। परंतु वस्त्रों के विषय में निर्देश स्त्रियों की प्रार्थना के लिए शर्तें नहीं हैं (वे वस्त्रों को प्रार्थना से नहीं जोड़ते), बल्कि स्त्रियों के आचरण के एक भाग के विरुद्ध एक समानांतर प्रतिकार हैं। वे अपने आप में स्वतंत्र हैं और इफिसुस की कलीसिया की स्त्रियों के विषय में एक चिंता व्यक्त करते हैं – ऐसी चिंता जो पहली शताब्दी के यूनानी-रोमी संसार के एक सांस्कृतिक मूल्य को दर्शाती है। यहाँ भोग-विलास के जीवन की पहचान बाल गूँथने की भव्य शैलियों, सोने, मोतियों और महँगे वस्त्रों से कराई गई है। निर्देश उचित वस्त्रों के वर्णन से आरंभ होते हैं (2:9)

और फिर एक पूरक प्रतिकार की ओर बढ़ते हैं: स्त्रियों को प्रोत्साहन कि वे भले कामों के द्वारा अपने आप को आकर्षक बनाएँ (2:10)।

9.3.3 स्त्रियों के बीच झूठी शिक्षा को सुधारने के निर्देश (2:11-15)

इस खंड का केंद्र-बिंदु, जिस पर सबसे अधिक ज़ोर दिया गया है और जिसकी सबसे अधिक व्याख्या की गई है, वह प्रतिकार है जो स्त्रियों के उनके घरों में झूठी शिक्षा द्वारा बहकाए जाने के विरुद्ध और स्त्रियों के बीच घर-घर मिथकों और वंशावलियों के फैलाव के विरुद्ध दिया गया है। **पौलुस स्त्रियों को निर्देश देता है कि वे घर में आत्मिक शिक्षा प्राप्त करें: "एक स्त्री [घर में खरी शिक्षा] पूरी शांति और पूर्ण अधीनता के साथ सीखे" (2:11)। घरेलू दायरे में होने का संकेत बहुवचन (स्त्रियाँ) से एकवचन (स्त्री) में परिवर्तन से मिलता है; हर स्त्री को व्यक्तिगत शिक्षा मिलनी चाहिए। उसकी आत्मिक शिक्षा या पालन-पोषण का उल्लेख भी एक घरेलू संदर्भ की ओर संकेत करता है, जिसकी पुष्टि उत्पत्ति 2 में विवाह की स्थापना के उल्लेख और बच्चे के जन्म के उल्लेख से होती है। तीमुथियुस बहुत संभवतः पौलुस की इस अपेक्षा को जानता था कि हर पुरुष अपनी पत्नी की आत्मिक शिक्षा का दायित्व उठाए।** इस खंड का पौलुस की परंपरा से एक निश्चित संबंध है, क्योंकि इसमें 1 कुरिन्थियों 14:34-35 के निर्देशों से स्पष्ट समानताएँ हैं:

"स्त्रियाँ सभाओं में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, परंतु वे अधीन रहें, जैसा व्यवस्था भी कहती है। यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें; क्योंकि स्त्री का सभा में बोलना लज्जा की बात है।"

[1 तीमुथियुस 2:11-12] स्त्री [घर में सही शिक्षा] चुपचाप पूरी अधीनता से सीखे। और मैं कहता हूँ कि स्त्री न शिक्षा दे और न अपने पति पर प्रभुता करे, परंतु चुपचाप रहे।

समानताएँ ये हैं: (1) चुप रहने/शांत रहने का निर्देश (σιγάτωσαν, ἡσυχίᾳ); (2) बोलने/शिक्षा देने पर प्रतिबंध (λαλεῖν, διδάσκειν); (3) अधीनता या आत्म-संयम की भाषा (ὑποτασσέσθωσαν, ἐν πάσῃ ὑποταγῇ); और (4) सामने की समस्या के प्रतिकार के रूप में घर में सीखना (μαθεῖν, μανθανέτω)। क्रिया μανθάνω ("सीखना") की पुनरावृत्ति सबसे स्पष्ट समानता है और इन अंशों के बीच की अन्य समानताओं की कुंजी है। दोनों अंशों में पतियों और पत्नियों के बीच अपेक्षित सांस्कृतिक व्यवहार का एक तत्व है। **स्त्री की शिक्षा सामान्यतः घर में, उस घरेलू दायरे में होती थी जिसमें वह कार्य करती थी। दोनों अंश संकेत देते हैं कि पौलुस की रीति पति के द्वारा घर में पत्नी की आत्मिक शिक्षा को बढ़ावा देती थी, विशेषकर उन मामलों में जहाँ शिक्षा या सुधार की आवश्यकता थी। कुरिन्थुस में स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में बोलकर बाधा डालती थीं। पौलुस इस संभावना पर विचार करता है कि वे इसलिए बोलती हैं क्योंकि उनके मन में प्रश्न हैं या वे शिक्षा को नहीं समझतीं। समस्या का उसका समाधान यह है कि हर पति अपनी पत्नी के प्रश्नों का घर में उत्तर देने का दायित्व उठाए। इस प्रकार 1 तीमुथियुस 2 और 1 कुरिन्थियों 14 संकेत देते हैं कि सामान्यतः पतियों और पत्नियों की धर्मवैज्ञानिक और बाइबल संबंधी समझ के बीच एक बड़ी खाई थी, और 1 कुरिन्थियों 14 यह भी दिखाता है कि कम से कम कुछ स्त्रियों में सार्वजनिक/कलीसियाई शिक्षा और उपदेश के समय उचित सामाजिक व्यवहार की समझ का अभाव था। यह पुरुषों और स्त्रियों के शिक्षा-स्तर और शिक्षा की रीति के अंतर को दर्शाता है; स्त्रियों को घर में पढ़ाया जाता था और इसलिए उन्हें कक्षा के वातावरण के अनुरूप ढाला नहीं गया था। यह उन पारंपरिक लिंग-भूमिकाओं के अनुरूप भी है जो पहली शताब्दी के यूनानी-रोमी संसार में घरेलू नियम-पट्टिकाओं (Haustafeln) द्वारा निर्धारित की गई थीं।**

इसलिए अधीनता और सीखने की भाषा घर की व्यवस्था (घरेलू नियम-पट्टिकाओं) के बड़े संदर्भ में और पौलुस की कलीसियाओं की स्थिति में ठीक बैठती है: जिन स्त्रियों को स्पष्ट रूप से शिक्षा की आवश्यकता थी, उन्हें घर में "सीखने वालों का रवैया और मनोभाव" अपनाना था। यह रवैया उसी के अनुरूप था जिसकी पहली शताब्दी में लड़कों की शिक्षा में अपेक्षा की जाती थी, और लड़कियों तथा स्त्रियों की घरेलू शिक्षा में भी। 1 तीमुथियुस 2:12 के अनुसार पौलुस एक पत्नी को यह अनुमति नहीं देता कि वह भूमिकाएँ उलट दे और घर में अपने पति की निर्णायक आत्मिक अगुवा और मार्गदर्शिका बन जाए (या वह ठीक इसी एक मामले में इसकी अनुमति नहीं देता): "मैं किसी पत्नी को अपने पति को शिक्षा देने या उस पर नियंत्रण रखने की अनुमति नहीं देता। इसके बजाय वह एक शांत श्रोता बने"। क्योंकि 2:11 घरेलू दायरे और शिक्षक-शिष्य संबंध की बात करता है, इसलिए 2:12 में शिक्षा देने का प्रतिबंध भी उसी घरेलू संदर्भ में है। व्याकरण की दृष्टि से इसे या तो एक सामान्य रीति के रूप में समझा जा सकता है, जिसके द्वारा पौलुस घर में शिक्षा के दायित्व में भूमिकाओं की अदला-बदली की अनुमति नहीं देता, या इसे इफिसुस की स्त्रियों से जुड़ी समस्याओं के विरुद्ध प्रतिकारों की निरंतरता के रूप में समझा जा सकता है। शिक्षा देने का प्रतिबंध ज़ोर देकर पहले स्थान पर रखा गया है; फिर पौलुस यह प्रतिबंध जोड़ता है कि स्त्री अपने पति को "नियंत्रित" न करे या उस पर "प्रभुत्व" न जमाए या उसे "उसकी इच्छा के विरुद्ध बाध्य" न करे। शायद शिक्षा देने में भूमिकाओं की अदला-बदली की चिंता एक अधिक सामान्य चिंता से जुड़ी है – भूमिकाओं के पूर्ण उलटाव की चिंता, जिसमें पत्नी अपने पति को अपने नियंत्रण में रखती है। यह झूठी शिक्षा और मुक्त हुई स्त्रियों से उत्पन्न समस्या हो सकती है, या यह सीधे धनी स्त्रियों से जुड़ी समस्या हो सकती है; धन कलीसिया में और विधवाओं के बीच स्पष्ट रूप से एक समस्या था। यदि विधवाएँ और पत्नियाँ विरासत के कारण धनी थीं, तो भूमिकाओं का उलटाव वास्तव में हुआ हो सकता है; वास्तव में अरस्तू (Aristoteles) ने ऐसे ही एक अपवाद का वर्णन किया, जिसमें पत्नी अपनी विरासत के कारण, जो उसे शक्ति देती थी, घर पर शासन करती थी: "परंतु कभी-कभी स्त्रियाँ शासन करती हैं, क्योंकि वे उत्तराधिकारिणियाँ होती हैं। इसलिए उनका शासन सद्गुण के अनुसार नहीं, बल्कि धन और शक्ति के आधार पर होता है, जैसे अल्पतंत्र में।" **परंतु यह निश्चित रूप से सांस्कृतिक आदर्श नहीं था, और यह सार्वजनिक रूप से पतियों और कलीसिया को लज्जित कर सकता था।**

घर में भूमिकाओं की अदला-बदली पर पौलुस का प्रतिबंध संभवतः तीन चिंताओं को दर्शाता है। **पहली**, स्त्रियाँ उन मिथकों और वंशावलियों का स्रोत हैं जिनका पौलुस विशेष रूप से इस प्रकार सामना करना चाहता है कि वह पुरुषों से अपनी पत्नियों को घर में शिक्षा देने को कहता है। मिथकों और वंशावलियों में अवश्य ही एक सामान्य आकर्षण रहा होगा और उन्होंने स्त्रियों को कलीसिया में एक हद तक विश्वसनीयता दी होगी; वास्तव में पौलुस को तीमुथियुस को भी चेतावनी देनी पड़ती है कि वह उनसे दूर रहे। **दूसरी**, पौलुस उस कलंक और नकारात्मक सांस्कृतिक मूल्यांकन से बचना चाहता है जो तब उत्पन्न होता यदि कलीसिया में स्त्रियाँ पुरुषों की भूमिका और व्यवहार अपना लेतीं; किसी धर्म पर उसकी स्त्रियों के कथित अनुचित व्यवहार के द्वारा आक्रमण करना आम बात थी। **तीसरी**, विवाह, कलीसियाई अगुवाई और अधिकार के विषय में पौलुस का आदर्श प्रति-सांस्कृतिक था। **उसके आदर्श की पहचान यह नहीं थी कि एक व्यक्ति दूसरे पर प्रभुत्व जमाए या उस पर अपमानजनक ढंग से शक्ति और नियंत्रण चलाए; दूसरे शब्दों में, वह यह भी नहीं चाहता कि पति अपनी पत्नियों पर** αὐθεντεῖν **(प्रभुता) करें।** फिर भी एक और विचार सामने हो सकता है। **यदि स्त्रियों का कोई समूह एकतरफ़ा निर्णय ले लेता कि वे अपने पतियों को यौन-संबंध से वंचित रखेंगी, तो उस संस्कृति की दृष्टि में यह उन सबसे बुरे अपराधों में से एक होता जो कोई पत्नी कर सकती थी। यह अकेला ही** αὐθεντέω **के अर्थ-विस्तार में ठीक बैठता, और यह मसीही समुदाय के संदर्भ में विशेष रूप से निंदनीय होता, जहाँ पुरुष के लिए विवाह के बाहर यौन-संबंध वर्जित था। पौलुस इस रीति के लिए कोई औचित्य सहन नहीं करता।**

1 तीमुथियुस 2:13-14 में उत्पत्ति 2-3 के संदर्भ, स्त्रियों की आत्मिक शिक्षा की आवश्यकता और झूठे शिक्षकों द्वारा स्त्रियों को बहकाए जाने के ढाँचे में रखे गए हैं, जहाँ इन शिक्षकों को शैतानी बताया गया है (5:15)। 2:13-14 में पौलुस लिखता है: "पहले आदम बनाया गया, और फिर हव्वा। आदम बहकाया नहीं गया, परंतु उसकी पत्नी वह बनी जिसने सीमा लाँघी, क्योंकि वह पूरी तरह बहकाई गई थी।" **संदर्भ को देखते हुए यह संभव है कि पौलुस सृष्टि और पतन के साथ प्रतिरूपात्मक (टाइपोलॉजिकल) समानताएँ दिखा रहा है। सकारात्मक दृष्टि से, प्रतिकार – पति के द्वारा पत्नी की आत्मिक शिक्षा – सृष्टि में आदम और हव्वा के बनाए जाने से मेल खाता है, कम से कम क्रम में।** नकारात्मक दृष्टि से, दुष्टात्मिक/शैतानी झूठे शिक्षकों द्वारा स्त्रियों का बहकाया जाना, सर्प द्वारा हव्वा के बहकाए जाने से मेल खाता है। **दूसरी ओर, यह तर्क दिया जा सकता है कि यह मिथकों की विषय-वस्तु का एक संक्षिप्त सुधार है।** एक तीसरी संभावना यह है कि पौलुस उस मुख्य विवाद-बिंदु की प्रासंगिक बाइबलीय पृष्ठभूमि बता रहा है जो स्त्रियों के बीच समस्याएँ पैदा कर रहा है: बच्चे जनने पर पतन के परिणाम।

1 तीमुथियुस 2:13-14 का कार्य चाहे जो भी हो, हमें 1 तीमुथियुस 2:15 में जन्म देने के उल्लेख को उस कथा-ढाँचे के प्रकाश में पढ़ना चाहिए जिसे पौलुस उत्पत्ति 2-3 के अपने सारांश के द्वारा सामने लाता है। स्त्रियों पर पतन के परिणाम उत्पत्ति 3:16 में बताए गए हैं: "फिर [परमेश्वर ने] स्त्री से कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा"। **पहले पाठकों ने जन्म देने के विषय में पौलुस के संकेत को सृष्टि और पतन के वृत्तांत की निरंतरता के रूप में समझा – इस कथन के रूप में नहीं कि स्त्रियाँ कैसे उद्धार पाती हैं या परमेश्वर ने उनके लिए कौन सी भूमिका ठहराई है। जन्म देने से जुड़े विषयों की इफिसुस की समस्याओं के लिए विशेष प्रासंगिकता है।** इनमें जन्मों की वृद्धि, स्त्रियों के लिए प्रसव की पीड़ा की वृद्धि, और पति द्वारा पत्नी पर प्रभुता शामिल हैं। वह झूठी शिक्षा, जो विवाह करने से रोकती थी और बच्चे जनने से दूर रखती थी, पतन को उलटने का एक प्रयास प्रतीत होती है। इसका कलीसिया की स्त्रियों के लिए आकर्षण होता, क्योंकि प्राचीन संसार में हर गर्भावस्था जानलेवा थी; गर्भावस्था और प्रसव की जटिलताएँ स्त्रियों की मृत्यु का सबसे आम कारण थीं। प्राचीन स्त्री-धर्म की एक सामान्य बात थी प्रसव के समय सहायता और सुरक्षा के लिए जादू-टोने, बलिदानों और प्रार्थनाओं का उपयोग; शायद स्त्रियों को लगता था कि उन्हें आवश्यक सुरक्षा झूठी शिक्षा के द्वारा या उसमें मिल रही है। प्रेरितों के काम के अध्ययनों में जादू-टोने की व्यापक रीति और आर्तिमिस (Artemis) की उपासना को इफिसुस की आरंभिक कलीसिया की एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया जाता है, विशेषकर इफिसुस के विश्वासियों द्वारा जादू की पुस्तकें जलाए जाने (प्रेरितों के काम 19:18-19) और चाँदी के कारीगरों के उपद्रव (19:23-40) के विषय में लूका के वृत्तांतों के कारण। यह निष्कर्ष निकालने के बजाय कि पुस्तकों को जलाने से स्थानीय जादू-टोने का आरंभिक मसीही विश्वास के साथ हर प्रकार का समन्वय (मिश्रण) सदा के लिए समाप्त हो गया, हमें इसे इस बात का प्रमाण समझना चाहिए कि साधारण लोगों में जादू-टोना कितना व्यापक था, और कि कुछ विश्वासी मसीही विश्वास में आने के बाद भी उसका अभ्यास करते रहे। हम निश्चिंत होकर मान सकते हैं कि जादू-टोना विशेषकर स्त्रियों के बीच एक मुद्दा बना रहा। जन्म और प्रसव-सहायता में वे स्थानीय, आज़माए हुए "घरेलू नुस्खों" का सहारा लेती रहीं – जो मूर्तिपूजक रीति में प्राकृतिक चिकित्सा और जादू-टोने का एक अविभाज्य मिश्रण था।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इफिसुस की संरक्षक देवी आर्तिमिस जन्म की देवी थी और सामान्य स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती थी। इफिसुस के लोगों और आर्तिमिस के पंथ के बीच एक विशेष बंधन था, और पॉल ट्रेबिल्को (Paul Trebilco) के अनुसार उसकी निरंतर जीवंतता का प्रमाण 104

ईस्वी का सैल्यूटेरिस (Salutaris) शिलालेख है, जो एक भव्य शोभायात्रा का वर्णन करता है जिसमें इकतीस मूर्तियाँ ले जाई जाती थीं, जिनमें नौ आर्तिमिस की थीं – नगर की एक महत्वपूर्ण घटना, जो हर दो सप्ताह में होती थी। गाय मैक्लीन रॉजर्स (Guy MacLean Rogers) टिप्पणी करते हैं कि देवी के जन्म ने "जटिल और बदलते रोमी संसार में इफिसुस के लोगों की सामाजिक और ऐतिहासिक पहचान की भावना" में योगदान दिया। उनका दावा है कि हर दो सप्ताह की शोभायात्राएँ लोगों को सिखाती थीं कि वे "इफिसुस में देवी आर्तिमिस के जन्म ... की ओर देखें, ताकि यह समझ विकसित कर सकें कि इफिसियों की सामाजिक और ऐतिहासिक पहचान एक ऐसी 'पवित्र' वास्तविकता में आधारित थी जो मनुष्यों द्वारा उत्पन्न सभी खतरों से अप्रभावित थी।" स्ट्रैबो (Strabo) ने लिखा: "आर्तिमिस का नाम इस तथ्य से पड़ा है कि वह लोगों को ἀρτεμέας बनाती है", जिसका अर्थ है "सुरक्षित और स्वस्थ"; या, जैसा आर्टेमिडोरस (Artemidorus) कहता है, ὑγιές (स्वस्थ)। इससे भी बढ़कर, आर्तिमिस की उपाधियों में से एक Σώτειρα (उद्धारकर्त्री) थी; और अकिलीज़ टेशियस (Achilles Tatius) लिखता है: "परंतु महान देवी आर्तिमिस ने उन दोनों को बचा लिया", जो स्पष्ट दिखाता है कि साधारण यूनानी भाषा में σῴζω (बचाना/उद्धार करना) से बिल-कुल स्वाभाविक रूप से आर्तिमिस की सहायता, चंगाई और सुरक्षा का वर्णन किया जाता था – जन्म जैसे जीवन-क्षेत्रों में भी। यह आश्चर्य की बात नहीं कि प्रेरितों के काम 19:23-27 पौलुस को आर्तिमिस के सीधे प्रतिद्वंद्वी के रूप में प्रस्तुत करता है, जो उस पंथ को निशाना बनाता है और जानबूझकर लोगों को आर्तिमिस की उपासना से हटाकर दूर ले जाता है।

खंड के अंतिम कथन (1 तीमुथियुस 2:15) को पढ़ने का एक ढंग यह है: पौलुस उस वास्तविक खतरे को गंभीरता से लेता है जो जन्म देना स्त्रियों के लिए है (मातृ-मृत्यु)। वह पति और पत्नी को प्रोत्साहित करता है कि वे परमेश्वर पर भरोसा रखें कि वह प्रसव में स्त्री की रक्षा करेगा। वह दोनों को दी गई इस आज्ञा में एक व्यावहारिक सहायता भी देता है कि वे एक दूसरे के साथ प्रेम, पवित्रता और आत्म-संयम से व्यवहार करें: "परंतु स्त्री जन्म देने में सुरक्षित पार कराई जाएगी, यदि वे दोनों संयम सहित विश्वास, प्रेम और पवित्रता में बने रहें"। जैसा अध्याय 4 [वेस्टफ़ॉल (Westfall) की पुस्तक के] में बताया गया है: यदि 1 तीमुथियुस 2:11-15 का संदर्भ घरेलू है, तो "यदि वे ... बने रहें" में "वे" से सबसे संभवतः पति और पत्नी अभिप्रेत हैं। दोनों 2:11 में ही दृष्टि में हैं, जहाँ घर में पत्नी की शिक्षा की बात है; 2:12 में उनका स्पष्ट उल्लेख है, और 2:13-14 में आदम और हव्वा प्रतिरूप के रूप में उनका प्रतिनिधित्व करते हैं। मातृ-मृत्यु पर अध्ययनों के अनुसार, पतन के परिणामों पर विजय पाने में पति की एक निर्णायक भूमिका है। जब पति अपनी पत्नियों को शामिल नहीं करते – बच्चों की संख्या के निर्णय में और प्रसव के समय देखभाल में – तो यह सीधे मृत्यु-दर में योगदान देता है। निस्संदेह, बार-बार की गर्भावस्थाओं को रोकने के लिए, जो स्वयं भी जानलेवा हो सकती हैं, आत्म-संयम का अभ्यास निर्णायक है।

जब हम 1 तीमुथियुस 2 की व्याख्या की ओर बढ़ते हैं, तो हम में से हर एक व्याख्या-संबंधी ऐसे निर्णय लेता है जो परिणाम निर्धारित करते हैं। क्योंकि यह एक व्यक्तिगत पत्र है, पाठक को बहुत सी ऐसी बातें, जो स्पष्ट रूप से लिखी नहीं हैं, पाठ से निकालनी पड़ती हैं। पत्री के संदर्भ का सबसे अच्छा संकेत स्वयं पाठ देता है। झूठी शिक्षाओं का सुधार संभवतः पूरी पत्री का लक्ष्य है (1 तीमुथियुस 1:3-4)। झूठी शिक्षा की समस्याएँ और उनसे जुड़े प्रश्न, जि-नका वर्णन अध्याय 4-6 में किया गया है, 2:1-15 में पुरुषों और स्त्रियों को दिए गए निर्देशों से सीधे जुड़े हैं, इसलिए जिस खंड पर विचार किया गया है उसे "झूठी शिक्षा के प्रतिकार" के रूप में समझा जा सकता है। पुरुषों के विषय में पौलुस की मुख्य चिंता क्रोध और झगड़ा है, जिस पर वह पत्री के दूसरे भाग में विस्तार से बात करता है; विवाद और झगड़े की यह प्रवृत्ति साप्ताहिक आराधना सभा तक सीमित नहीं की जा सकती। 2:9-15 में स्त्रियों को संबो-

धित करने वाला विवादित अंश भी किसी आराधना सभा के ढाँचे में ठीक नहीं बैठता। उसे बेहतर रूप से एक प्रकार की घर की व्यवस्था (घरेलू नियम-पट्टिका) के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें घर में घुस आई झूठी शिक्षाओं को हर घर में पति द्वारा सुधारा जाना था, जो अपनी पत्नी की आत्मिक शिक्षा का दायित्व उठाने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में था। स्त्रियों को कलीसिया में अगुवों के रूप में सहभागी होने से रोकने के बजाय, पौलुस शिष्यता की उन कमियों को संबोधित करता है जो इफिसुस के विश्वासियों को परिपक्व और खरी शिक्षा से रोक रही हैं। सृष्टि और पतन के विषय में पौलुस के संकेत विवाह, यौन-संबंध और जन्म देने के लिए सीधे प्रासंगिक हैं – वे विषय, जिन्हें पौलुस पत्री में आगे स्त्रियों के बीच समस्या-क्षेत्रों के रूप में पहचानता है। पौलुस अपने निर्देशों को इस प्रकार समाप्त करता है कि वह प्रसव की यातना पर पतन के परिणामों के विषय में स्त्रियों की बहुत वास्तविक चिंताओं को संबोधित करता है, और वह उद्धार/बचाव की एक आत्मिक प्रतिज्ञा और एक व्यावहारिक समाधान दोनों प्रस्तुत करता है।

उपसंहार

मेरा अनुवाद 2021 में जल्दबाज़ी में बना और अक्टूबर 2026 में दोहराया गया। पौलुस के इस छोटे से पाठ के विषय में वेस्टफ़ॉल के द्वारा मेरे लिए कई बातें अधिक स्पष्ट हुई हैं। मेरे पास जो जर्मन टीकाएँ (कमेंट्री) उपलब्ध हैं, मैंने उन्हें देखा। उनके विषय में बस कुछ टिप्पणियाँ। यह अलग-अलग व्याख्याओं की समीक्षा नहीं है।

विलियम बार्कले (William Barclay), 1956: पवित्रशास्त्र की व्याख्या के इस दिग्गज के लिए बात स्पष्ट है: शिक्षा देने वाली स्त्रियों पर लगी पाबंदियों का कारण केवल ऐतिहासिक संदर्भ है। उनका उद्देश्य मसीहियों की बदनामी का प्रतिकार करना था। उनके लिए किसी व्यक्ति का वरदान और उसकी सेवा मायने रखती है, लिंग से पूरी तरह स्वतंत्र।

लॉरेंज़ ओबरलिनर (Lorenz Oberlinner), 1994, Herder, Herders Theologischer Kommentar zum Neuen Testament[2] (विस्तृत, गहन, ज्ञानवर्धक, परंतु ऐतिहासिक-(बाइबल-)आलोचनात्मक)

"क्योंकि पास्टरीय पत्रियों (Pastoralbriefe) के लिए मसीही विश्वास और जीवन का महत्व अविश्वासियों पर उसके प्रभाव में प्रकट होता है (तुलना कीजिए 3:7; 5:14; 6:1; तीतुस 2:5,8,10), इसलिए इसमें कोई बाधा नहीं कि पास्टरीय पत्रियों का पौलुस एक मसीही स्त्री की अपनी आदर्श छवि की कल्पना में 'उस सादी, सद्गुणी स्त्री के आदर्श' से दिशा ले, 'जो घर और परिवार की शांति में कार्य करती है' – जो यूनानी-रोमी और यहूदी दोनों धारणाओं के अनुरूप है।"[3]

"हमारे इस खंड की ऐसी व्याख्या के लिए, जो विषय के अनुरूप हो और पास्टरीय पत्रियों के अभिप्राय के अनुकूल हो, इस प्रश्न का उत्तर विशेष महत्व का होगा कि वह समकालीन ऐतिहासिक संदर्भ या कलीसियाई परिस्थितियाँ, जिनके कारण ये निर्देश दिए गए, किस हद तक निर्धारित की जा सकती हैं।"[4]

"यहाँ स्त्रियों के लिए दिए गए निर्देशों में ऐतिहासिक संदर्भ को सदा ध्यान में रखना चाहिए – उनके ऐतिहासिक मूल्यांकन के विषय में भी, और उनके परवर्ती प्रभाव की संभावनाओं और सीमाओं के विषय में भी।"[5]

हाइन्ज़-वर्नर नॉयडॉर्फ़र (Heinz-Werner Neudorfer), 2004, Historisch-Theologische Auslegung (HTA) I मैं इस शृंखला को जर्मन भाषा में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ मानता हूँ। (अंग्रेज़ी में मेरे Logos संस्करण में ऐसी लगभग 15 अच्छी टीकाएँ उपलब्ध हैं।)

नॉयडॉर्फ़र अन्य बातों के साथ यह ध्यान दिलाते हैं कि "वैसे ही स्त्रियाँ भी" स्त्रियों की सार्वजनिक प्रार्थना से संबंधित है। अन्य सभी की तरह वे भी यहाँ मुख्यतः कलीसिया की आराधना सभा के लिए निर्देशों के बारे में सोचते हैं। मेरे विचार में उन्हें भी इस अंश की आद्योपांत सुसंगत व्याख्या प्रस्तुत करने में कठिनाई होती है, परंतु वे बहुत से रोचक विवरणों की ओर ध्यान दिलाते हैं।

वे पुरुष और स्त्री की भूमिका पर हुई चर्चाओं का एक संक्षिप्त सिंहावलोकन भी देते हैं, जिन्हें इतने विस्तार और इतनी लंबी अवधि में मैं केवल अंग्रेज़ी भाषी जगत से जानता हूँ। यह स्थिति अब 20 वर्ष से अधिक पुरानी है।

हांस बुर्की (Hans Bürki), 1983, Wuppertaler Studienbibel

बुर्की ज़ोर देते हैं कि सभी निर्देश किसी दुरुपयोग से संबंधित हैं। कुल मिलाकर पढ़ने योग्य, और पत्री के संदर्भ को उभारने वाली।

ब्रदरन आंदोलन: डार्बी (Darby) (Synopsis, 19वीं शताब्दी), एफ. बी. होल (F. B. Hole), आरेंड रेमर्स (Arend Remmers) (1986), विलियम मैकडोनल्ड (William MacDonald) (1989)

ब्रदरन आंदोलन की टीकाओं की **सभी** की यह विशेषता है कि उनके लिए सांस्कृतिक संदर्भ, इफिसुस की स्थिति और पत्री का व्यक्तिगत स्वरूप लगभग महत्वहीन या अज्ञात हैं। इन विचारों ने लंबे समय तक मेरी सोच को आकार दिया। वे निम्नलिखित बातों में एकमत हैं:

बात (मुख्यतः) आराधना की सभा की है।

बात परमेश्वर द्वारा निर्धारित पुरुष और स्त्री की भूमिकाओं की है। पुरुष स्त्री से ऊपर है। इसका आधार आदम और हव्वा की सृष्टि से दिया जाता है। इसे सृष्टि की व्यवस्था कहा जाता है।

सभी नारीवाद को इसका कारण मानते हैं, जब इस पाठ को शब्दशः और परमेश्वर के अधिकारपूर्ण वचन के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता।

उनके अनुसार पाठ सरल और स्पष्ट है।

होल: "पहली बात, परमेश्वर ने सृष्टि में पुरुष को प्राथमिकता और अगुवाई दी। इसका उल्लेख पद 13 में है। फिर वह आता है जो पतन के समय हुआ, जब हव्वा ने अगुवाई अपने हाथ में ली और बहकाई गई। पद 14 इसी के बारे में है। यह खंड पूरी तरह असंदिग्ध और स्पष्ट है। यहाँ जो सिखाया गया है, उसके विषय में वास्तव में कोई संदेह नहीं है।"[6]

मैकडोनल्ड: "अपने तर्कों को सृष्टि पर आधारित करके पौलुस इस हर विचार को बाहर कर देता है कि यहाँ सांस्कृतिक समस्याओं की बात हो सकती है।"

परंतु वेस्टफ़ॉल के अध्ययन को देखते हुए बात यह हो सकती है:

बात पुरुषों और स्त्रियों की सृष्टि-आधारित भूमिका की नहीं है।

पौलुस पुरुषों और स्त्रियों की ठोस समस्याओं को संबोधित करता है और उनके प्रतिकार बताता है। ऐसी समस्याएँ बहुत से स्थानों पर मिलती-जुलती रूप में हो सकती हैं – या बिलकुल भी नहीं। यहाँ बात ठोस रूप से इफिसुस की है, जहाँ तीमुथियुस रह रहा था।

सृष्टि की ओर यह बहुत संक्षिप्त संकेत किसी सर्वकालिक या पारलौकिक सृष्टि-व्यवस्था का वर्णन नहीं करता। यह उल्लेख एक सादृश्य के रूप में, संबंधित स्त्रियों के लिए एक तुलनात्मक उदाहरण के रूप में दिया गया है। "आदम पहले बनाया गया" की तुलना उन पतियों से की गई है जो खरी शिक्षा जानते थे और जिन्हें घर में अपनी पत्नियों को शिक्षा देनी थी।

हव्वा उसी प्रकार बहकाई गई जैसे इफिसुस की कुछ स्त्रियाँ, जिन्हें इसलिए शिक्षा की आवश्यकता थी। (शायद यह पाठ यह भी संकेत देता है कि आदम ने, जिसे हव्वा के सृजे जाने से पहले आज्ञा मिली थी, उसे इस आज्ञा के विषय में पर्याप्त शिक्षा नहीं दी थी। परंतु यह केवल एक अनुमान है।)

यह भी भली-भाँति संभव है कि यहाँ सृष्टि के विषय में इफिसुस के (बाद में ज्ञानवादी/ग्नॉस्टिक) मिथकों को सुधारा जा रहा है, जिनमें हव्वा पहले सृजी गई थी और आदम बहकाया गया था।

इसलिए जो कोई इन थोड़े से शब्दों को सृष्टि की व्यवस्था का दर्जा देता है, वह स्त्री को, अर्थात् हर स्त्री को, एक बहकाए जा सकने वाला लिंग बना देता है, मानो पुरुष बहकाए नहीं जा सकते या शायद कम बहकाए जा सकते हैं। पाठ की यह पढ़ाई बाइबल के पूरे चित्र का खंडन करती है, जहाँ पुरुष भी स्त्रियों जितने ही बहकाए और धोखा दिए जा सकते हैं: यह स्त्रियों की समस्या नहीं, यह पूरी मानवजाति की समस्या है!

यह कि आदम पहले सृजा गया और उसके बाद स्त्री, आदम को अपने आप सिर या अगुवा नहीं बना देता। समय का क्रम इसका कोई कारण नहीं है। पहले सृजे गए पशु भी तो मनुष्यों से ऊपर नहीं हैं। मनुष्य सबसे अंत में सृजा गया। इस संदर्भ में हम अक्सर "सृष्टि का मुकुट" शब्द सुनते हैं। यदि इसी सोच को आदम और हव्वा पर लागू किया जाए, तो सबसे बाद में सृजी गई हव्वा ऊँचे स्थान पर होती। निस्संदेह ऐसा नहीं है। समय का क्रम संभवतः एक अंतर उत्पन्न करता है, परंतु कोई पदानुक्रम नहीं। यदि कोई पत्नी अपने पति से आयु में बड़ी हो, तो हम यह निष्कर्ष तो नहीं निकालेंगे कि वह ऊँचे स्थान पर है और वह अधीनस्थ है।

जिसकी सोच पदानुक्रम से ढली है, वह "पहले सृजा गया" शब्दों को इसी प्रकार समझेगा। परंतु क्या पौलुस का यही अभिप्राय है? 1 कुरिन्थियों 11 के समानांतर अंश में पौलुस इस निष्कर्ष को निरस्त करता है या उसे पहले ही रोक देता है, ताकि स्पष्ट हो जाए कि कोई पदानुक्रमित अंतर नहीं है। [1 कुरिन्थियों 11:11-12] तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष के और न पुरुष बिना स्त्री के है। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परंतु सब वस्तुएँ परमेश्वर से हैं।

कुल मिलाकर, नए नियम की मूल भाषा जानने वाले बहुत से व्याख्याकार कहते हैं कि यह एक कठिन पाठ है। केवल इसी कारण से इससे शिक्षा देने और अगुवाई करने पर इतना दूरगामी प्रतिबंध बनाना उचित नहीं है।

ब्रदरन आंदोलन के व्याख्याकार इस बात में एक दूसरे से बढ़-चढ़कर हैं कि वे हर स्त्री को उसका अधीनस्थ स्थान सौंपें और उस पर सभाओं में चुप रहने का बोझ डालें। उनके अनुसार यह विचार कि स्त्रियाँ भी अगुवाई कर सकती हैं, शुद्ध नारीवाद है।

इसके अतिरिक्त उनमें से कोई भी यह विश्वसनीय कारण नहीं बता पाता कि आख़िर जन्म देने का उल्लेख भी क्यों किया गया है। वेस्टफ़ॉल की प्रशंसा, जो दिखाती हैं कि इस विषय का संबंध ठीक झूठी शिक्षा से है (विवाह न करना, ब्रह्मचारी रहना, ताकि इस प्रकार उद्धार पाया जाए) और ठीक आर्तिमिस से भी, जो इफिसुस की संरक्षक देवी थी और पूरे रोमी साम्राज्य में जानी और पूजी जाती थी।

मेरा ध्यान इस बात पर गया कि विशेष रूप से ब्रदरन आंदोलन के व्याख्याकार अंततः स्वयं इस कठोर शिक्षा-प्रतिबंध पर (यदि इसकी ऐसी व्याख्या की जाए) कैसे अचंभित होते हैं। यह केवल पंक्तियों के बीच में दिखाई देता है। यह इस बात से पता चलता है कि वे फिर यह उभारने का कितना प्रयास करते हैं कि बहनों की सेवाएँ कितनी महत्वपूर्ण हैं, मानो उन्हें किसी बात की भरपाई करनी हो। परंतु इसकी बिलकुल आवश्यकता नहीं, यदि इफिसुस में बात स्त्रियों के किसी विशेष समूह की, या यहाँ तक कि किसी एक विशेष स्त्री की है, जिसे शिक्षा देने और अपने पति पर प्रभुता करने से मना किया गया है।

मैं एक बार फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाता हूँ, जैसा मैंने अपनी पुस्तक "स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!" ("Frauen, vergebt uns!") में बताया है, कि शिक्षा देने का अर्थ कभी भी प्रभुता करना नहीं है। पुरुष को भी स्त्री पर प्रभुता नहीं करनी चाहिए, न ही शिक्षा देने के द्वारा। नया नियम इस विचार को नहीं जानता। 2:12 में बात शिक्षा देने और प्रभुता करने की एक नकारात्मक शब्द-जोड़ी की है। ऐसा नहीं होना चाहिए, न किसी स्त्री के द्वारा, न किसी पुरुष के द्वारा।

तीमुथियुस को लिखी दूसरी पत्री का एक वचन बहुत स्पष्ट कर देता है: पुरुषों और स्त्रियों दोनों को समान रूप से शिक्षा देने का दायित्व मिला है – बिना किसी भेद के, चाहे निजी घर में हो या सभा में। पौलुस कहता है: "और जो बातें तूने बहुत से गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमुथियुस 2:2) "मनुष्यों" से अभिप्राय लोग हैं (यूनानी ἄνθρωποι, anthropoi), अर्थात् पुरुष और स्त्रियाँ!

अंत में: इस पाठ को स्त्रियों के व्यवहार के संबंध में बहुत बार और बहुत ज़ोर देकर लागू और प्रयुक्त किया जाता है। पुरुषों के द्वारा। परंतु क्या ये वही पुरुष हैं जो हर स्थान पर, जब भी वे मिलते हैं, हाथ उठाकर प्रार्थना करते हैं? पुरुष पौलुस के इस निर्देश का पालन कितना शब्दशः करते हैं?

आगे एक पाठ-प्रस्ताव है: मैं **पौलुस के पाठ को स्वतंत्र रूप से अपने शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूँ, जैसे मैं उसे संक्षेप में समझाऊँगा – जहाँ तक यह संभव है।** मैंने वेस्टफ़ॉल (Westfall) के पिछले अध्याय की अंतर्दृष्टियों को इसमें समाहित किया है।

1 तीमुथियुस 2:8-15, Hans-Jörg Ronsdorf द्वारा भावानुवाद:

प्रिय तीमुथियुस, इफिसुस में कुछ पुरुषों और कुछ स्त्रियों से जुड़ी समस्याओं पर काबू पाने के लिए यह होना चाहिए: पुरुष प्रार्थना करना आरंभ करें। हर उस स्थान पर, जहाँ वे मिलते हैं। सार्वजनिक रूप से। मिथकों और झूठी शिक्षाओं पर झगड़ने के बजाय। क्रोध और कलह प्रार्थना में बाधा डालते हैं। मिलकर प्रार्थना करना एक शांत, शांतिपूर्ण जीवन की ओर ले जाता है। उठे हुए, खुले और ग्रहण करने वाले हाथों के साथ, जो झगड़े और हिंसा से शुद्ध हों, वे मिलकर हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आराधना करें और परमेश्वर के सिंहासन के सामने सब मनुष्यों के लिए विनती करें।

उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि स्त्रियाँ – मेरा अभिप्राय विशेषकर धनी स्त्रियों से है – जहाँ कहीं भी वे जाएँ और दिखाई दें, वहाँ संयम दिखाएँ। उनका श्रृंगार भव्य, ध्यान खींचने वाले केश-विन्यास से न हो, न सोने और मोतियों से, और न महँगे, अनोखे वस्त्रों से। ऐसा श्रृंगार ध्यान उन्हीं की ओर खींचता है और अक्सर दूसरी स्त्रियों से आगे निकलने के लिए होता है। जो स्त्रियाँ मसीहा के पीछे चलती हैं, उन्हें इस प्रकार अपना प्रदर्शन करने या इस ढंग से प्रभाव और प्रभुत्व जमाने की आवश्यकता नहीं। एक ऐसा श्रृंगार और प्रभाव है जो अधिक मूल्यवान है और जिसका सब मनुष्य आदर भी करते हैं: भले काम।

स्त्री यह सीखे कि सुसमाचार का सत्य क्या है। सीखने की इच्छा के साथ, ध्यान से और जिज्ञासा से। अपने ही घर में। विशेषकर इन स्त्रियों में से एक को मैं ये सब झूठे मिथक और शिक्षाएँ आगे फैलाने की अनुमति नहीं देता। वह अपने पति से ऊपर न उठे, न मनमाने ढंग से उस पर प्रभुत्व जमाए और न उसे उपदेश दे। जब उसका पति उसे खरी शिक्षा समझाए, तो वह सुने। उसे इसकी आवश्यकता है। क्योंकि उसमें समझ की कमी है, और यह अज्ञान बड़ी हानि करता है जब वह घरों में मिथक फैलाती है। आदम और हव्वा की सृष्टि इस परिस्थिति के लिए उपयुक्त उदाहरण है। आदम पहले सृजा गया और उसी को हव्वा को शिक्षा देनी थी। वह धोखा नहीं खाया। परंतु हव्वा धोखा खा गई और भरमाई गई। उसने सीमा लाँघी। इफिसुस की कुछ स्त्रियों के साथ भी ऐसा ही होगा, यदि वे स्वेच्छा से अपने पतियों से नहीं सीखतीं: वे हव्वा की तरह धोखा खाएँगी और दूसरों के लिए फंदा बन जाएँगी।

और इन स्त्रियों को जानना चाहिए कि बच्चे जनते समय उनकी रक्षा की जाएगी। हव्वा के बहकाए जाने और उसके परिणामस्वरूप प्रसव की बड़ी पीड़ाओं के बावजूद। परमेश्वर, हमारा उद्धारकर्ता, बचाता है – इफिसुस की मनुष्यों द्वारा बनाई गई संरक्षक देवी आर्तिमिस नहीं। इसलिए वे विश्वास, प्रेम और पवित्रता पर ध्यान केंद्रित करें। मिलकर, पति-पत्नी के रूप में, जो आदम और हव्वा की तरह एक तन हैं। स्त्रियाँ बच्चे पैदा करने से न डरें, और पुरुष यौन रूप से संयम रखें और ध्यान रखें कि बहुत अधिक गर्भावस्थाएँ उनकी पत्नियों के लिए खतरा हैं।

Hans-Jörg Ronsdorf, 26.2.2021, अक्टूबर 2026 में संशोधित

टिप्पणियाँ

1. **कथात्मक पाठ** (narrativer Text) किसी घटना और/या प्रसंग के कथा-रूप वर्णन और प्रस्तुति को कहते हैं। यहाँ इसका अर्थ है 1 तीमुथियुस 2:13-14 में उत्पत्ति 2-3 का संक्षिप्त पुनर्कथन।
2. Oberlinner, L., Erster Timotheusbrief, Herders Theologischer Kommentar zum Neuen Testament, Herder, Freiburg; Basel; Wien 1994
3. Oberlinner, L., 83–84.
4. Oberlinner, L., 85.
5. Oberlinner, L., 89.
6. Hole, F. B., Grundzüge des Neuen Testaments, Christliche Schriftenverbreitung, Hückeswagen 1989, 1380.